मध्यप्रदेश शासन
वन विभाग

मध्यप्रदेश वनांचल संदेश

अप्रैल-जून, 2018

MADHYA PRADESH VANANCHAL SANDESH

April-June, 2018

RNI Reference No. : 1322876 Title Code : MPHIN34795

Photo Credit- Nishant Kapoor

मध्यप्रदेश शासन
वन विभाग

मध्यप्रदेश वनांचल संदेश

अप्रैल-जून, 2018

MADHYA PRADESH VANANCHAL SANDESH

April-June, 2018

Patron :
M.K. Sapra
Principal Chief Conservator of Forests
(HOFF), Satpura Bhawan, Bhopal

Editorial Board :
S.K. Mandal
Principal Chief Conservator of Forests
(Research, Extension and Lok Vaniki)

Puskar Singh
Principal Chief Conservator of Forests
(Development)

Dr. Abhay Kumar Patil
Additional Principal Chief Conservator of Forests (Complaints and Redressal)

Alok Kumar
Additional Principal Chief Conservator of Forests (Wildlife)

Sameeta Rajora
Chief Conservator of Forests
Director Van Vihar

S.P. Jain
DCF

B.K. Dhar
Prachar Adhikari

Editor :
Dr. P.C. Dubey
Additional Principal Chief Conservator of Forests (Research, Extension and Lok Vaniki)

Prachar Prasar Prakosth Team :
Neeraj Gautam, Coordinator
Diwakar Pandit, Cordinator

Contact :
Prachar Prasar Prakosth, Room no. 140, Satpura Bhawan, Bhopal
Email : dcfpracharprasar@mp.gov.in
Contact : 07552524293

Owner & Publisher :
Prachar Prasar Prakosth (M.P. F.D.)
Printed by Madhya Pradesh Madhyam
Bhopal

Photo Credit- Parth Jha

The views expressed in various articles belong to the authors of the article. Madhya Pradesh Forest Department may not agree with the views expressed by authors and will not be responsible for the correctness of the article. Madhya Pradesh Forest Department is not responsible for any liability arising out of context/text of the article published in this magazine. No part of this magazine can be reproduced and published without the consent of the publisher of Madhya Pradesh Vananchal Sandesh. All legal disputes will come under the jurisdiction of Bhopal, Madhya Pradesh.

इस बार के अंक में

01

04

08

01
तेंदूपत्ता संग्रहण संबधी गतिविधियाँ

03
विश्व पर्यावरण दिवस

04
विश्व पर्यावरण दिवस पर वन विहार को प्लास्टिक मुक्त बनाने का संकल्प

04
वन अनुसधान संस्थान, जबलपुर में विश्व पर्यावरण दिवस का आयोजन

अनुसंधान विस्तार एवं लोकवानिकी

05
वनदूत प्रशिक्षण

06
वन रोपणियों की ऑनलाईन अनुश्रवण व्यवस्था प्रारंभ

06
अचार गुठली संग्रहण

08
बारहमासी कटहल एक प्रयास

09
खण्डवा में दुर्लभ प्रजातियों के पौधे की तैयारी

10
समितियों के माध्यम से बीज संग्रहण

12
हरित वाहन: पौधे पहुंचे घर एवं खेतो तक

From Wildlife

16
सतकोषिया बाघ हस्तांतरण

17
टाईगर फाउन्डेशन सोसाइटी की 12वीं आमसभा बैठक के महत्वपूर्ण निर्णय

18
एस.एफ.आर.आई. द्वारा बाघों की पुन:स्थापना

19
वन समितियों को लाभांश वितरण

From S.F.R.I.

19
राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर में राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड, नई दिल्ली का क्षेत्रीय सह सुविधा केन्द्र

21
राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर में प्रशिक्षण

वन विहार राष्ट्रीय उद्यान से

22
वन विहार राष्ट्रीय उद्यान में आदमखोर नर बाघ का आगमन

23
वन विहार राष्ट्रीय उद्यान में माधव नर तेंदुआ शावक की आमद

24
Herpetology Workshop

15

18

23

25
पेंथर रेस्क्यू ऑपरेशन

26
भारतीय वन सेवा के अधिकारियों की पदोन्नति एवं सेवानिवृत्ति (अप्रैल-जून)

27
विभागीय समाचार एवं गतिविधियां

28
नवाचार

28
श्री अशोक भार्गव के द्वारा पर्यावरण के प्रति सराहनीय पहल

29
कचरे से हरियाली

30
किसानों की ओर से

33
अखबारों के आइनों से

37
नौकायन प्रशिक्षण

28

29

34

Photo Credit- Raghunandan Gumballi

संपादकीय

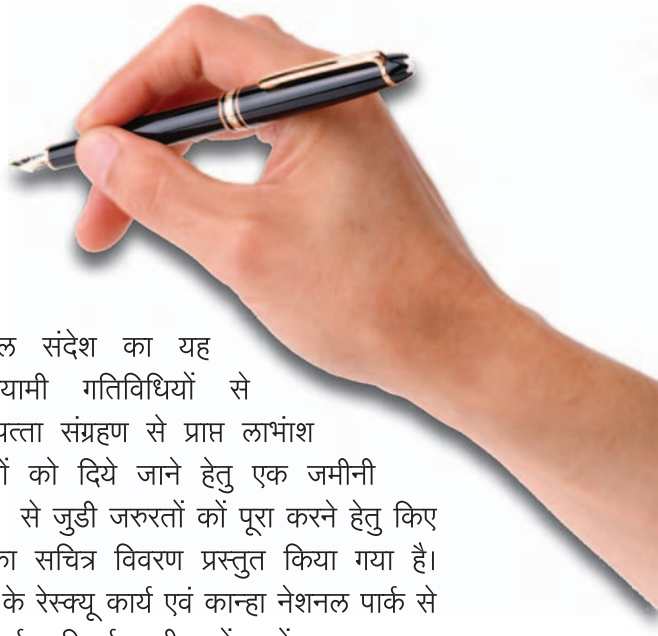

म.प्र. वनांचल संदेश का यह अंक बहुआयामी गतिविधियों से भरा है। तेंदुपत्ता संग्रहण से प्राप्त लाभांश से वनवासियों को दिये जाने हेतु एक जमीनी आवश्कताओं से जुडी जरुरतों कों पूरा करने हेतु किए गए प्रयास का सचित्र विवरण प्रस्तुत किया गया है। वन्य प्राणियों के रेस्क्यू कार्य एवं कान्हा नेशनल पार्क से सतकोषिया टाईगर रिजर्व, उड़ीसा में बाघों का एक राज्य से दूसरे राज्य में स्थानांतरण की यह अभिनव पहल का प्रस्तुतीकरण इस अंक को और अधिक रोचक बनाता है। अनुसंधान–विस्तार की दिशा में उच्च गुणवत्ता के बीजों का वन समितियों द्वारा संग्रहण एवं पौध तैयारी में इन बीजों का उपयोग, वनदूतों का प्रशिक्षण, क्षमता विकास, पौध तैयारी एवं विस्तार कार्य एवं समितियों की भागीदारी की प्रस्तुति सराहनीय कार्य है।

नये अंक को व्यापक स्तर तक सुलभ कराये जाने हेतु लगातार प्रयास किया जा रहा है जिसमें IT शाखा की भूमिका सराहनीय रही है इसी प्रकार IIFM संस्थान द्वारा वनदूतों का प्रशिक्षण भविष्य में जन भागीदारी को और बढ़ावा देगा ऐसा विश्वास है।

डॉ. पी.सी दुबे

तेंदूपत्ता संग्रहण संबधी गतिविधियाँ

तेंदूपत्ता संग्राहकों को जूता–चप्पल, पानी की बोतल तथा महिला संग्राहकों को साड़ी प्रदाय योजना

महामहिम राष्ट्रपति, श्री रामनाथ कोविन्द द्वारा गुना में दिनांक 29 अप्रैल 2018 को आयोजित कार्यक्रम में 5000 जूता, 5000 चप्पल, 5000 पानी की बोतल एवं 10000 साड़ी का वितरण किया गया। माननीय मुख्यमंत्री एवं वन मंत्री के द्वारा 45 जिले के 55 जिला यूनियनों को 68000 जूता, 60000 चप्पल, 221000 पानी की बोतल एवं 98000 साड़ी का वितरण किया गया। इसके अतरिक्त प्रदेश के विभिन्न जिलों में प्रदेश के माननीय मंत्रियो एवं विधायको के द्वारा भी सामग्री वितरण कार्यक्रम सम्पन्न किया गया।

महुआ फूल/गुल्ली एवं आचर गुठली का समर्थन मूल्य पर संग्रहण कार्य–

मध्यप्रदेश शासन द्वारा निर्धारित न्यूनतम समर्थन मूल्य पर महुआ फूल/गुल्ली एवं आचर गुठली का संग्रहण कार्य किया गया। वर्ष 2017 में इतिहास का सर्वाधिक 75232 क्विंटल महुआ फूल के क्रय से 22.54 करोड़ का पारिश्रमिक वनवासियों के मध्य वितरित हुआ है। संग्रहित मात्रा मे से 28 हजार क्विंटल महुआ फूल का विक्रय किया जा चुका है।

वनोपज संग्रहण के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य का निर्धारण

राज्य शासन द्वारा जारी आदेश दिनांक 10 अप्रैल, 2018 से महुआ फूल तथा महुआ गुल्ली 30 रूपये प्रति किलो, आचार की गुठली 100 रूपये प्रति किलो, साल बीज 10 रूपये प्रति किलो तथा नीम की निमौली 7 रूपये प्रति किलो न्यूनतम समर्थन मूल्य पर वन समितियों के माध्यम से खरीदी का निर्णय लिया गया है।

तेंदूपत्ता संग्रहण दर में वृद्धि का निर्णय

राज्य शासन द्वारा जारी आदेश दिनांक 10 अप्रैल, 2018 से वर्ष 2018 संग्रहण काल हेतु एवं आगामी आदेश तक तेंदूपत्ते की संग्रहण दर रूपये दो हजार प्रति मानक बोरा निर्धारित की गई है।

विश्व पर्यावरण दिवस पर मध्यप्रदेश वन विभाग

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम द्वारा प्रत्येक वर्ष 5 जून विश्व पर्यावरण दिवस के रूप मे मनाया जाता है। इस वर्ष भारत सरकार को विश्व होस्ट कंट्री के रूप में घोषित किया गया है। इस वर्ष पर्यावरण दिवस की थीम 'बीट प्लास्टिक पोल्यूशन' रखी गई थी। प्लाटिक और पॉलीथीन आज हमारे जीवन का एक अभिन्न हिस्सा बन गए हैं। परंतु इनके बढ़ते उपयोग और तत्पश्चात उचित निष्पादन के अभाव में पर्यावरणीय समस्याएं परिलक्षित हो रही हैं। इस समस्या की ओर सारी दुनिया का ध्यान आकृष्ट करने के लिए 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया। इस विषय पर व्यापक जन जागृति लाने हेतु भारत शासन के पर्यावरण मंत्रालय द्वारा पर्यावरण दिवस के अवसर पर जन जागरुकता हेतु कार्यक्रम आयोजित किए जाने की सलाह दी ।

राज्य जैव-विविधता बोर्ड ने किये कैनवास और कार्ड-संदेश लेखन कार्यक्रम

विश्व पर्यावरण दिवस पर मध्यप्रदेश राज्य जैव-विविधता बोर्ड अरेरा हिल्स स्थित किसान भवन परिसर में 'बीट प्लास्टिक पाल्यूशन' थीम पर आधारित कैनवास और कार्ड पर संदेश लेखन कार्यक्रम का आयोजन किया। उल्लेखनीय है कि संयुक्त राष्ट्रसंघ द्वारा इस बार विश्व पर्यावरण दिवस की मेजबानी भारत को सौंपी गई है। इस वर्ष की थीम है ''बीट प्लास्टिक पाल्यूशन'।

बोर्ड के सदस्य सचिव श्री आर. श्रीनिवास मूर्ति ने बताया कि राज्य जैव-विविधता बोर्ड द्वारा प्लास्टिक के दुष्प्रभावों के प्रति लोगों को जागरूक किया जा रहा है। प्लास्टिक से पर्यावरण और जानवरों को नुकसान पहुँच रहा है। कैनवास और कार्ड पर संदेश लेखन का मुख्य उद्देश्य लोगों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करना तथा प्लास्टिक के उपयोग से होने वाले खतरों से अवगत कराना है।

कार्यक्रम में बोर्ड द्वारा गत 12 मई, 2018 को आयोजित विद्यालयीन और महाविद्यालयीन चित्रकला प्रतियोगिता के विजयी छात्र-छात्राओं को प्रमाण-पत्र दिये गये। इस कार्यक्रम में स्थानीय नागरिक, स्वयंसेवी संस्थानों के प्रतिनिधि, विद्यालयीन और महाविद्यालयीन छात्र-छात्राएँ उपस्थित थे।

विश्व पर्यावरण दिवस पर वन विहार को प्लास्टिक-मुक्त बनाने का लिया संकल्प

विश्व पर्यावरण दिवस पर वन विहार राष्ट्रीय उद्यान में प्रधान मुख्य वन संरक्षक, वन्य प्राणी, श्री शाहबाज अहमद ने सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को वन विहार के अंदर निषिद्ध मानक की पॉलीथिन, एकल उपयोग प्लास्टिक का उपयोग नहीं करने और वन विहार को प्लास्टिक-मुक्त क्षेत्र बनाने की शपथ दिलाई। इस मौके पर अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक श्री दिलीप कुमार और वन विहार की संचालक श्रीमती समीता राजौरा उपस्थित थीं।

श्री अहमद और वन विहार प्रबंधन ने प्लास्टिक बॉटल का उपयोग रोकने के लिये सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को एस.एस. बॉटल वितरित की। वन विहार में कार्यरत श्रमिकों को पीने के पानी की पर्याप्त व्यवस्था के लिये जगह-जगह मटके भी रखवाये गये हैं।

वन विहार में स्थित कियोस्क पर भी प्लास्टिक की प्लेट और चम्मच के स्थान पर प्रकृति में विघटित होने वाली सामग्री जैसे लकड़ी के चम्मच, दोना, पत्तल आदि में खाद्य सामग्री विक्रय करने के निर्देश दिये गये हैं।

संचालक श्रीमती समीता राजौरा और वन विभाग के अधिकारियों-कर्मचारियों ने विश्व पर्यावरण दिवस पर परिसर की साफ-सफाई की। वन विहार को प्लास्टिक-मुक्त बनाने के स्वच्छता अभियान में कचरे के साथ पॉलिथीन बैग, पाउच और प्लास्टिक बॉटल एकत्रित की गईं।

राज्य वन अनुसधान संस्थान, जबलपुर में विश्व पर्यावरण दिवस का आयोजन

राज्य वन अनुसधान संस्थान, जबलपुर, द्वारा 5 जून 2018 को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर प्लास्टिक प्रदूषण को मात (Beat Plastic Pollution) विषय पर संस्थान परिसर तथा ग्वारिघाट में संस्थान के अधिकारी तथा कर्मचारियों द्वारा स्वच्छता अभियान तथा स्कूली छात्रों हेतु चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 70 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

अनुसंधान विस्तार एवं लोकवानिकी

वनदूत प्रशिक्षण

वनदूत ''कृषि वानिकी से कृषक समृद्धि योजना'' का एक प्रमुख अंग है। इस योजना की सफलता वनदूतों की कार्यकुशलता एवं विषय वस्तु के ज्ञान पर निर्भर करती है। अत: यह प्रयास वनदूतों को उपयुक्त प्रशिक्षण प्रदान कर उनकी कार्यकुशलता को और अधिक बढ़ाना है। वनदूत प्रशिक्षण की जिम्मेदारी वन विभाग के अनुसंधान एवं विस्तार द्वारा इंगित संस्थान भारतीय वन प्रबंध संस्थान (IIFM) को दी गई है। इस दौरान मुख्यत: तीन कार्यशालाएं आयोजित की जाएंगी – जो क्रमश: इंदौर, भोपाल और जबलपुर में आयोजित होंगी। इन कार्यशालों का आयोजन भारतीय वन प्रबंध संस्थान (IIFM) के प्रोफेसर डॉ. देवाशिष देवनाथ के नेतृत्व में किया जा रहा है। प्रथम चरण में इन्दौर मुख्यालय पर दिनांक 21 एवं 22 जून 2018 को अनुसंधान वृत्त इन्दौर, रतलाम, खण्डवा एवं झाबुआ के वनदूतों को प्रशिक्षण दिया गया। इस कार्यशालाआ में वन विभाग के अधिकारीगण, IIFM के अन्य प्रोफेसर एवं विभिन्न प्रतिष्ठित कृषि वैज्ञानिकों एवं उद्यानिकी विशेषज्ञों द्वारा विभिन्न विषयों पर संबोधन दिया गया। इस प्रशिक्षण से वनदूतों कों प्रचार प्रसार की पेशेवर तकनीकों, मिट्टी की उपयुक्तता, भूजल समस्याओं के निवारण, पौधा रोपण के तरीकों आदि विषयों से परिचय कराया जा रहा है। इन प्रशिक्षण शिविरों में प्रदेश के 11 अनुसंधान वृत्तों के वनदूत सम्मिलित हो रहे हैं। द्वितीय चरण में 11 अनुसंधान वृत्तों में कार्यशालाएं आयोजित होंगी। स्थानीय विशेषज्ञ एवं कृषि विकास केन्द्रों, कृषि विशेषज्ञ एवं वन विभाग के अधिकारियों द्वारा प्रशिक्षण दिया जावेगा एवं क्षेत्र में आने वाली कठिनाइयों पर चर्चा कर विस्तृत रणनीति तैयार की जावेगी।

वन रोपणियों की ऑनलाईन अनुश्रवण व्यवस्था प्रारंभ

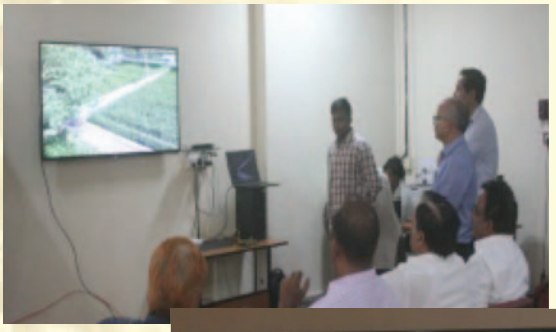

प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख डॉ. अनिमेष शुक्ला ने दिनांक 28 अप्रैल, 2018 को सतपुड़ा भवन, भोपाल स्थित वन मुख्यालय में विभागीय रोपणियों की ऑनलाईन अनुश्रवण व्यवस्था का शुभारंभ किया। इस व्यवस्था से विभागीय रोपणियों में पौधों की गुणवत्ता को और बेहतर किया जा सकेगा। प्रदेश के 11 अनुसंधान एवं विस्तार वन वृत्तों की प्रमुख रोपणियों में जहां इंटरनेट सुविधा उपलब्ध है, सीसीटीवी कैमरे स्थापित किये जा रहे हैं। इसके माध्यम से इन रोपणियों में पौधों की गुणवत्ता को बेहतर बनाने की दिशा में वन मुख्यालय से अनुश्रवण एवं मूल्यांकन किया जा सकेगा। इस अवसर पर श्री रवि श्रीवास्तव, प्रबंध संचालक, म.प्र. राज्य वन विकास निगम, श्री शाहबाज अहमद, प्रधान मुख्य वन संरक्षक (अनुसंधान विस्तार एवं लोक वानिकी), श्री रमेश कुमार गुप्ता, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक (प्रशासन–2) तथा डॉ. पी.सी. दुबे, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक (अनुसंधान विस्तार एवं लोक वानिकी) उपस्थित रहें।

संयुक्त वन प्रबंध समितियों द्वारा रोपणियों हेतु उच्च गुणवत्ता का अचार बीज (गुठली) संग्रहण

सिवनी जिले के ग्राम सोंठावाडी , सिरकापुर,पीपरढाना एवं वकोडा सिवनी में उच्च गुणवत्ता के अचार बीजो के संग्रहण के लिए उत्तर सिवनी वन मंडल के छपारा परिक्षेत्र में वनमंडलाधिकारी, उत्तर सिवनी वनमंडल, उप वनमंडलाधिकारी छपारा, परिक्षेत्र अधिकारी छपारा, की उपस्थिति में अचार गुठली परिपक्व होने के पहले ग्राम वन समिति बकोडा के समिति सदस्यों के साथ वर्तमान में प्रचलित अचार गुठलू क्रय विक्रय के संबंध में विस्तृत चर्चा दिनांक 13/05/2018 एवं 18/05/2018 को की गई। वन समितियों के सदस्यों ने बताया कि वनों में पाये जाने वाले अचार वृक्षों को कच्चा ही समिति सदस्य तोड़ लेते हैं जिनका बाजार में बहुत कम दर 70 से 80 रूपये प्रति किलो प्राप्त होता है। जबकि निजी भूमि में मौजूद अचार वृक्षों को अच्छा पकाकार मई माह में अचार गुठलू संग्रहित किया जाता है जिसका बाजार दर बहुत अच्छा 110 से 120 रूपये प्रति किलो प्राप्त होता है। आयोजित समिति बैठक में यह निर्णय लिया गया कि विनाश विहीन संग्रहण किया जावेगा एवं संकट से जूझ रही प्रजातियों का संरक्षण एवं संवर्धन कार्य किया जावेगा, इसका संकल्प लिया गया।

वृक्षों का आवंटन

वनों में पाये जाने वाले अचार के फलों को पकने के पूर्व तोड़ लेने एवं संग्रहण करते समय वृक्षों को क्षति पहुंचाने की समस्या को दूर करने हेतु समिति सदस्यों ने सर्व सहमति से वनों में पाये जाने वाले अचार वृक्षों को आपस में बांटने का निर्णय लिया। इस कार्य को करने से वनों

में पाये जाने वाले अचार वृक्षों से प्राप्त गुठली पकने से पूर्व संग्रहित करते समय वृक्षों की शाखाओं को क्षति पहुँचाने पर सदा के लिए विराम लग गया है।

समिति द्वारा अचार गुठली क्रय

समिति सदस्यों से की गई चर्चा से समिति बकोडा द्वारा परिपक्व अचार गुठली संग्रहण करना एवं समर्थन मूल्य पर अचार के परिपक्व अच्छी गुणवत्ता के गुठली का क्रय करना प्रारम्भ किया गया। बाजार में जैसे ही समिति द्वारा अचार गुठली क्रय करना प्रारंभ किया गया स्थानीय व्यापारियों ने अपना खरीदी दर बढ़ाकर 105 रूपए प्रति किलो कर दिया गया। व्यापारियों द्वारा बाजार में दर बढ़ाने पर समिति द्वारा भी 107 रूपए प्रति किलो पर खरीदी प्रारंभ कर दिया गया। व्यापारियों ने पुन: प्रतिस्पर्धा में आकर गुठली दर 110 रूपए प्रति किलो कर दिया। इस तरीके से बाजार में प्रतिस्पर्धा निर्मित हुई जिससे संग्राहकों को ज्यादा लाभ प्राप्त होना शुरू हुआ। वर्तमान में समितियों द्वारा प्रतियोगिता करने से अच्छी गुणवत्ता का बीज 120 रूपए प्रति किलो संग्राहकों से प्राप्त हुआ है। इस तरह बाजार में वन समितियों द्वारा अचार गुठली क्रय करने के कारण प्रतियोगिता में आकर स्थानीय व्यापारी भी बाजार दर बढ़ाने पर मजबूर हो जाते हैं जिससे संग्राहकों को अतिरिक्त लाभ होता है। वर्तमान स्थिति तक समितियों को अधिकतम 150 रूपए प्रति किलो प्राप्त हुए. और समितियों को कुल भुगतान 3 लाख 45 रूपए प्राप्त हुए जिसमे समितियों को लगभग 88 हजार रूपए का लाभ हुआ. इसप्रकार करीब 200 लोग इस गतिविधि से लाभान्वित हुए।

अच्छे बीज की जांच

समिति द्वारा क्रय करने के पूर्व 10 बीज पानी में डालकर देखा जाता है कि बीज की गुणवत्ता कैसी है। 9 से 10 बीज डूबने पर ही बीज क्रय किया जाता है अर्थात 90 प्रतिशत गुणवत्ता से कम का बीज नहीं खरीदा जाता।

वृक्ष संख्या:– वनों में प्रचलित कार्य आयोजना के अनुसार 22 वृक्ष प्रति हेक्टेयर मौजूद हैं। वनसुरक्षा समिति बकोड़ा के पास राजस्व क्षेत्र में 800 वृक्ष मौजूद हैं। परिपक्व वृक्ष से करीब 10 किलोग्राम अचार गुठली प्राप्त होती है अच्छी फसल जिसमें फल बड़े हैं तथा गुणवत्ता अच्छी है और भार भी ज्यादा होता है जिसमें 1 किलोग्राम में 3300 से 4000 बीज प्राप्त होते हैं बकोडा सिवनी, सोंठावाडी, सिरकापुर, पीपरढाना ग्रामों के राज्स्व भूमि, निजी भूमि में वनभूमि में अचार वृक्ष प्रचुर मात्रा में मौजूद हैं इन क्षेत्रों से प्लस ट्री का चयन कर उच्च गुणवत्ता के बीज एवं नर्सरी में उच्च गुणवत्ता के पौधे तैयार किये जा सकते हैं। इस वर्ष कुल सग्रहण 23 क्विंटल रहा। जिसमे जबलपुर में 7 क्विंटल, रीवा, बैतूल, इंदौर, रतलाम ,सागर एवं सिवनी में 2–2 क्विंटल तथा भोपाल में 1 क्विंटल प्रदाय किया गया।

बारहमासी कटहल अब अनुसन्धान विस्तार की रोपणियों में

''बारहमासी कटहल'', जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है बारह महीने अर्थात पूरे वर्ष फल देने वाली कटहल की प्रजाति। कटहल की यह प्रजाति मध्यप्रदेश में टीकमगढ़, दमोह एवं सागर जिले में पायी जाती है। इसकी उपयोगिता एवं अपेक्षित लाभ को देखते हुए मध्यप्रदेश वन विभाग की अनुसन्धान एवं विस्तार शाखा द्वारा इसके रोपण का कार्य प्रारम्भ किया गया है। रोपण द्वारा मदर ब्लॉक तैयार करने हेतु कटहल के बीजो के उत्कृष्ट स्त्रोंतों की आवश्यकता है जिसके लिए अनुसन्धान कार्य डॉ. वी.के. सिंह जो कि जवाहर लाल नेहरू कृषि विश्व विद्यालय, टीकमगढ़ में असोसिएट प्रोफेसर हैं, के द्वारा किया गया है इस गतिविधि में उनके द्वारा टीकमगढ़, दमोह एवं सागर तीनो जिलों से रोपण हेतु उत्तम गुणवत्ता के बीज एकत्र किये गए और उक्त जिलों की रोपणियों में रोपित किये गए जिसके सकारात्मक परिणाम प्राप्त हुए। इस प्रकार रोपणियों से कृषि वानिकी से कृषक समृद्धि योजना के तहत कृषकों को उत्तम गुणवत्ता के बारहमासी कटहल दिए जा सकेंगे जिससे किसानों को अधिक से अधिक लाभ हो। इस पूरी गतिविधि से यह भी अपेक्षित है कि बारहमासी कटहल के रोपण द्वारा कृषको में पौधा रोपण के प्रति रुझान जागृत होगा, साथ ही साथ एक स्थानीय पौध प्रजाति का सरंक्षण किया जा सकेगा। वर्तमान में अनुसन्धान एवं विस्तार की रोपणियों से 5000 कटहल के पौधे किसानो को प्रदान किये जा चुके है।

अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त खण्डवा में दुर्लभ प्रजातियों के पौधे तैयार करना

अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त खण्डवा की निमाड़ रोपणी में इस वर्ष 25 दुर्लभ प्रजातियों के कुल 50000 पौधे तैयार किये गए हैं, जिनमें शीशम, अंजन, कुल्लू, सलई, बीजा, साजा, अर्जुन, पाडर, गरूड़, भिलवा, अचार, रीठा, गधा पलाश, हल्दू, खिरनी आदि प्रमुख हैं।

वर्ष 2018–19 अनुसंधान एवं विस्तार वृत्त खण्डवा की विभिन्न रोपणियों में लगभग 50 दुर्लभ प्रजातियों के 5.00 लाख पौधे तैयार करने का लक्ष्य निर्धारित कया गया है। इन प्रजातियों के रोपण से वनक्षेत्र में जैव विविधता संरक्षण के उद्देश्य की पूर्ति हो सकेगी।

Erithrina suberosa, गदापलास

Ficus arnottiana, पीपली

Desmodium oojeinense, तिन्सा

Stereospermum chelonoides, पाढर

Hardwickia binata, अंजन

Dalbergia latifolia, शीशम

Sterculia urens, कुल्लू

Pteocarpus marsupium, बीजा

सागौन बीज संग्रहण

दमोह क्षेत्र में पाए जाने वाले तेलिया सागौन (Tectona grandis Telvi Variety) जो रोग प्रतिरोधक है जिसमे teak skelatenizer का प्रभाव नहीं होता तथा लकड़ी भी गहरे रेशे वाली होती है जिसमे तेल की मात्रा अधिक होने के कारण यह खराब नहीं होती । स्थानीय स्तर पर बीज एकत्रण एवं उपचारण कर नर्सरी में बोया गया। इस प्रकार उच्च गुणवत्ता का बीज स्थानीय स्तर पर एकत्र कर उससे उच्च गुणवत्ता के पौधे तैयार किये जा रहे है। साथ ही साथ तेलिया सागौन में SFRI द्वारा अनुसंधान हेतु प्रोजेक्ट तैयार किये गये हैं। जिसमें इसकी उपयोगिता एवं महत्ता को देखते हुए इसकी रिर्सोस मेपिंग, जेनेटिंग मेपिंग, वुड एनालायसिस, मृदा परीक्षण आदि विषयों पर अनुसंधान कार्य किया जाना है।

तेलिया सागौन बैतूल जिले में माचना नदी के किनारे भी पाया जाता है जहाँ समितियों के माध्यम से बीज संग्रहण किया गया साथ ही साथ खंडवा जिले के काली भीत क्षेत्र से भी सागौन बीज का संग्रहण किया जा रहा है।

समितियों के माध्यम से बीज संग्रहण

संयुक्त वन प्रबन्धन अन्तर्गत गठित वन समितियों के सशक्तिकरण एवं उनकी सहभागिता बढ़ाने के साथ ग्रामीणों की आय के साधन उपलब्ध कराने की दिशा में पहल

प्रदेश में वानिकी कार्यो के लिए पौधा उत्पादन का प्रभार अनुसंधान एवं विस्तार वृत्तों के पास है। पौधा उत्पादन हेतु बीजों की आपूर्ति स्थानीय स्तर पर की जाती है। सागौन के बीज की माँग अधिक होने से गुणवत्तायुक्त बीजों की आपूर्ति के लिए राज्य वन अनुसंधान संस्थान जबलपुर को अधिकृत किया गया है। संस्थान के द्वारा प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों का अन्वेषण किया जाता है तथा स्थानीय ग्रामीणों के माध्यम से बीज संग्रहण कर उपचारण कर अनुसंधान विस्तार वृत्तों को प्रदाय किया जाता है।

वन विभाग द्वारा क्षेत्रीय ईकाइयों को गुणवत्तापूर्ण बीज सरलता एवं स्थानीय स्तर पर उपलब्ध कराने की दृष्टि से क्षेत्रीय वनमण्डलों में उच्च गुणवत्ता श्रेणी के क्षेत्रों से बीज संग्रहण स्थानीय संयुक्त वन प्रबंधन समितियों के माध्यम से कराने का विचार किया गया। इस क्रम में खण्डवा के साथ अन्य वन वृत्तों में व्यापक रूप से समिति सदस्यों एवं वनकर्मियों की कार्यशाला आयेजित की गई जिसमे क्रियान्वयन के संबंध में चर्चा कर रूपरेखा तय की गई, इससे समितियों के सशक्तिकरण एवं वनसंरक्षण में उनकी सहभागिता को बढ़ाने के साथ ही स्थानीय ग्रामीणों को आय के साधन उपलब्ध कराने की दिशा में पहल की गयी।

वनमण्डल खण्डवा के परिक्षेत्र पूर्व कालीभीत, आँवलिया, खालवा, पश्चिम कालीभीत, मूंदी, पुनासा, चांदगढ़, अंतर्गत सागौन प्रजाति का वनक्षेत्र बहुतायत में पाया जाता है। सागौन वनों की वर्ग III की स्थल गुणवत्ता IVA, IVB की मध्यम आयु के वृक्ष अत्यधिक मात्रा में पाये जाते हैं जिससे सागौन बीज की गुणवत्ता बहुत अच्छी है इस दृष्टिकोण को मद्देनजर रखते हुए समितियों के माध्यम से सागौन बीज संग्रहण की योजना तथा कार्यविधि पर चर्चा के लिए खण्डवा मुख्य वन संरक्षक एवं वन मंडल अधिकारी द्वारा पश्चिम कालीभीत, पूर्व कालीभीत एवं पुनासा में फरवरी 2018 से मार्च 2018 तक वनसुरक्षा समितियों का परिक्षेत्र स्तर पर सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलनों में वनसुरक्षा समितियों के

अध्यक्ष/सदस्य/सचिव/सह सचिव, परिक्षेत्र अधिकारी, परिक्षेत्र सहायक उपस्थित रहे। सम्मेलन में समिति अध्यक्ष एवं सदस्यों ने सागौन बीज संग्रहण के संबंध में चर्चा में बताया की खालवा, रोशनी, आंवलिया एवं पुनासा के वनक्षेत्रों में इस वर्ष सागौन बीज काफी मात्रा में आया है। जिसके संग्रहण की कार्यवाही की जानी चाहिए, इसी प्रक्रार वनमंडल स्तर पर आयोजित कार्यशाला आशापुर काष्ठागार में समस्त वनसुरक्षा समिति अध्यक्ष एवं उपस्थित कर्मचारी एवं अधिकारियों को परिक्षेत्र में वनसुरक्षा समिति/ग्राम वन समिति की बैठक लेकर सागौन बीज संग्रहण के संबंध में समझाइश देकर समिति का ठहराव प्रस्ताव प्राप्त कर संग्रहण की कार्यवाही करना सुनिश्चित किया गया, इस गतिविधि से विभाग को उत्तम गुणवत्ता के बीज की उपलब्धता के साथ स्थानीय ग्रामीणों को आय के साधन भी प्राप्त हुऐ। संग्रहण दरों के प्रस्ताव तैयार कर मुख्य वनसंरक्षक खण्डवा वृत्त से अनुमोदन प्राप्त किया गया।

हरितवाहन- पौधे पहुचे घर एवं खेतो तक

अपर मुख्य सचिव श्री के. के. सिंह चाबी प्रदान करते हुए

अपर मुख्य वन संरक्षक, अनुसंधान एवं विस्तार श्री पी.सी. दुबे वाहन प्रदान करते हुए

वन विभाग के अनुसंधान एवं विस्तार शाखा द्वारा एक नई गतिविधि का आरम्भ किया गया है जिसे 'हरित वाहन' का नाम दिया गया है। इसे भविष्य में शहरी पौधरोपण के लिए एक महत्वपुर्ण कदम माना जा रहा है। साथ ही साथ यह किसानों के लिए भी लाभ का विषय है।

वन विभाग द्वारा इस योजना में लोगों की मांग के अनुसार घर पहुँच सेवा प्रदान की जा रही है जिससे निवर्तन में आने वाली बाधाओं को दूर किया जा सके। और लोगों को अधिक से अधिक लाभ दिया जा सके। यह योजना इस वर्ष जून के महीने से आरम्भ किया गया है और इस योजना के प्रति लोगों में अच्छी प्रतिक्रिया देखने को मिल रही है। ऐसे लोग जिनको कम संख्या में पौधों की जरूरत होती थी, उन्हें इस योजना से लाभ मिलेगा। शहर की कालोनियों में भी लोग इस योजना से लाभ लेकर पौधे लगा रहे हैं। इस योजना के तहत कैम्पा मद से 22 वाहन खरीदे गए हैं और 11 अनुसंधान एवं विस्तार वृत्तों में से प्रत्येक वृत्त को 2-2 वाहन उपलब्ध कराया गया है। आशा है कि भविष्य में अधिक से अधिक लोग इस सेवा का लाभ ले सकेंगे और शहर एवं गाँवों को हरा भरा करने एवं पर्यावरण को स्वच्छ बनाये रखने में अपना योगदान देंगे।

शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

संदेश

हर्ष का विषय है कि जनसामान्य में हरियाली के संरक्षण के प्रति जागरूकता लाने के लिए हरियाली महोत्सव मनाया जा रहा है।

मनुष्य का जीवन पर्यावरण में संतुलन पर निर्भर है। जीवन की हरियाली को बचाने के लिए पौधों को लगाना और उनकी रक्षा कर पेड़ बनाना जरूरी है। राज्य सरकार ने गत वर्ष नर्मदा सेवा यात्रा के तहत जनसहयोग से व्यापक स्तर पर पौधारोपण किया। इस वर्ष भी 15 जुलाई से नर्मदा सहित अन्य नदियों के कैचमेंट क्षेत्र में पौधारोपण किया जा रहा है।

मुझे विश्वास है कि वानिकी विकास योजनाओं से जहां हरियाली का विस्तार होगा वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के नये अवसर भी उपलब्ध होंगे। प्रत्येक नागरिक एक पौधा लगाने का संकल्प लें।

आशा है कि हरियाली महोत्सव पौधारोपण के साथ-साथ पौधों की सुरक्षा के प्रति जागरूकता लाने में सफल होगा।

हरियाली महोत्सव की सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

(शिवराज सिंह चौहान)

डॉ. गौरीशंकर शेजवार

मंत्री
म.प्र. शासन
वन योजना, आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग

संदेश

पौधारोपण के प्रति जनसाधारण में जागरूकता लाने के लिए प्रतिवर्ष हरियाली महोत्सव मनाया जाता है। प्रदेश में गतवर्ष ''नमामि देवी नर्मदे सेवा यात्रा'' के सफल आयोजन के बाद इस वर्ष भी व्यापक स्तर पर पौधारोपण किया जा रहा है। वन विभाग द्वारा इस वर्ष सात करोड़ पौधे लगाए जाएंगे।

माननीय मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी के कुशल नेतृत्व में वनों के संवहनीय विकास के साथ, वनवासियों को वनोपज पर आधारित रोजगार के नये अवसर उपलब्ध कराने पर विशेष बल दिया गया है। इस दिशा में अनेक नई योजनाएं प्रारम्भ की गई हैं। इन योजनाओं के उत्साह जनक परिणाम सामने आये हैं।

प्रदेश में वन प्रबंधन के तहत गठित पंद्रह हजार से अधिक वन समितियां विभाग के साथ जुड़कर वन संवर्धन और सुरक्षा में महत्वपुर्ण भूमिका निभा रही हैं।

हरियाली महोत्सव के अवसर पर आप सभी से अनुरोध है कि वन विकास की योजनाओं के माध्यम से पौधारोपण करें तथा इनकी रक्षा की जिम्मेदारी भी लें। पौधारोपण के लिए उपयुक्त पौधे निकटतम वन रोपणी से प्राप्त किये जा सकते हैं। पौधारोपण में शैक्षणिक संस्थाओं, पंचायतों तथा अन्य अशासकीय संगठनों का सहयोग अपेक्षित है।

हरियाली महोत्सव –2018 की सफलता के लिए शुभकामनाएं।

हार्दिक शुभकामनाएं।

(डॉ. गौरीशंकर शेजवार)

सूर्य प्रकाश मीणा

राज्यमंत्री
म.प्र. शासन
उद्यानिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण
(स्वतंत्र प्रभार) एवं वन

संदेश

पौधा रोपण के प्रति जनचेतना जाग्रत करने के उद्येश्य से प्रतिवर्ष हरियाली महोत्सव मनाया जाता है। हमें पौधे लगाने और उनकी सुरक्षा में पूरा सहयोग करना होगा, तभी भावी पीढ़ी को स्वच्छ पर्यावरण दे पाएंगे।

प्रदेश में माननीय मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के कुशल नेतृत्व में वनों के संरक्षण और संवर्धन की दिशा में प्रभावी पहल हुई है, जिसका लाभ प्रदेश वासियों को मिल रहा है।

हरियाली महोत्सव को जनआन्दोलन का स्वरूप देने के लिए प्रदेश में इस वर्ष में आयोजन को व्यापक स्तर पर क्रियान्वित किया जा रहा है। इस रोपण कार्य में जनप्रतिनिधि, शासन के विभिन्न विभागों के अधिकारी तथा कर्मचारी एवं अन्य आम नागरिक भाग लेंगे।

हरियाली महोत्सव के अवसर पर इस अच्छे काम की पहल करें। मध्यप्रदेश में हरियाली सम्पदा है, आपके सहयोग से ज्यादा समृद्ध होगी।

शुभकामनाओं सहित।

(सूर्य प्रकाश मीणा)

Photo Credit- Sanjay Dutt & Sundeep Kheria

सतकोषिया टाइगर रिज़र्व में गूजेंगी बाघों की दहाड़

बाघों के संरक्षण हेतु भारत और मध्य प्रदेश में चल रहे बहुआयामी प्रयासों में एक सुनहरा अध्याय और जुड़ गया जब मध्य प्रदेश के कान्हा टाइगर रिजर्व से एक बाघ को उड़ीसा राज्य के सतकोषिया टाइगर रिजर्व में बाघों का कुनबा बढ़ाने के लिये स्थानांतरित किया। इस कार्य हेतु प्रयास लगभग एक वर्ष पूर्व ही प्रारंभ हो गये थे जब सर्वप्रथम उड़ीसा राज्य के वन विभाग ने इस आशय में प्रस्ताव बनाकर राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण की तकनीकी समिति के समक्ष प्रस्तुत किया। तकनीकी समिति के अनुमोदन पश्चात् उड़ीसा राज्य ने मध्य प्रदेश शासन के समक्ष इस आशय का प्रस्ताव प्रस्तुत किया। मध्य प्रदेश शासन ने प्रदेश में और व्यापक रूप से संपूर्ण भारत वर्ष में बाघ संरक्षण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता प्रदर्शित करते हुए न्यूनतम संभव समय में अपनी अनुमति जाहिर की और प्रदेश से 6 बाघों को उड़ीसा राज्य के सतकोषिया टाइगर रिजर्व स्थानांतरित करने की अनुमति जारी कर दी।

उड़ीसा राज्य से समस्त क्षेत्रीय तैयारियों की पूर्ण होने की सूचना मिलने पर मध्य प्रदेश राज्य में तय किया गया कि सर्वप्रथम कान्हा टाइगर रिजर्व से एक नर बाघ भेजा जाएगा दिनांक 20 जून 2018 को कान्हा टाइगर रिजर्व के मुक्की परिक्षेत्र के एक युवा बाघ जिसे एमबी-2 के नाम से पहचाना जाता है, को मध्य प्रदेश के वन्यप्राणी चिकित्सकों ने बेहोश किया एवं वन्यप्राणी परिवहन हेतु विकसित किये गये विशेष परिवहन ट्रक में उसे सतकोषिया हेतु रवाना कर दिया गया। लगभग 24 घंटे की लम्बी यात्रा के उपरांत 21 जून को बाघ सतकोषिया पहुंचा और उसे अस्थायी रूप से एक छोटे बाड़े में रखा गया जिससे कि वह नये वातावरण में खुद को ढाल सके। हालांकि सतकोषिया टाइगर रिजर्व में 2 बाघ हैं पर संभवत: वे अधिक आयु के हैं और प्रजनन हेतु उपयुक्त नहीं हैं अत: सतकोषिया में बाघों के प्रजनन प्रक्रिया को प्रारंभ करने के लिये एक मादा बाघिन भी शीघ्र भेजा जाना आवश्यक था इस दृष्टि से दिनांक 27 जून 2018 को लगभग 2/3 वर्ष आयु की एक युवा मादा बाघिन बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व, उमरिया से सतकोषिया रवाना कर दिया गया।

आगामी अवधि में क्रमिक रूप से 4 और बाघ मध्य प्रदेश से सतकोषिया टाइगर रिजर्व भेजे जाएंगे। मध्य प्रदेश एवं उड़ीसा राज्य के द्वारा बाघ संरक्षण हेतु किये गये इस अंतर्देशीय प्रयासों की पूरे भारत वर्ष एवं विश्व के वन्यप्राणी विदों द्वारा प्रशंसा की जा रही है।

मध्य प्रदेश टाईगर फाउन्डेशन सोसाइटी की 12वीं आमसभा बैठक के महत्वपूर्ण निर्णय

मध्य प्रदेश टाईगर फाउन्डेशन शासी निकाय की 12वीं बैठक मध्य प्रदेश ईको टूरिज्म बोर्ड, म.प्र. शासन, वन विभाग की गई। इस आमसभा में सालाना में रूपये10,000/- मात्र सभी प्रकार के शुल्क यथावत 1,00,000/- से रूपये दान में देते हैं उन्हें कुछ जाने पर अनुमोदन हुआ है जो राशि के व्यय पर सर्वसम्मति प्राप्त राशि के 20 प्रतिशत में राशि व्यय करने के विकल्प

MP TIGER FOUNDATION SOCIETY
रक्षति व्याघ्र मा प्रकृतिं

सोसाइटी की आमसभा एवं दिनांक 19 जून 2018 को भोपाल में माननीय वनमंत्री, अध्यक्षता में आयोजित की व्यक्तिगत सदस्यता शुल्क की वृद्धि की गयी। बाकी रहे। दानदाताओं जो रूपये 10,00,000/-की राशी आकर्षक उपहार भी दिए 2 वर्षों तक वैध रहेगा। प्राप्त से अनुमोदन किया गया तथा अन्त:स्थलीय संरक्षण पर भी पर सहमति दी गई।

सोसाइटी द्वारा चलाये जा रहे "Close to My Heart" अभियान के अंतर्गत अत्यंत अल्प अवधि में रूपये 10,00,000/- रुपए से अधिक की सहयोग राशि प्राप्त हो चुकि है। अध्यक्ष महोदय ने इन प्रयासों की सराहना की एवं आगामी वर्ष इसे और भी व्यापक पैमाने पर प्रचारित किये जाने हेत निर्देश दिए।

कान्हा टाइगर रिज़र्व से नौरादेही वन्य जीव अभ्यारण्य में बाघिन का स्थानांतरण करने वाली टीम

एस.एफ.आर.आई. द्वारा बाघों की पुनःस्थापना

राज्य के वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर द्वारा दो बाघों को नौरादेही वन्य जीव अभ्यारण्य में पुन: स्थापित किया गया। इस वर्ष 18 एवं 29 अप्रैल को कान्हा तथा बांधवगढ़ बाघ संरक्षित क्षेत्र से मादा एवं नर बाघों को लाया गया तथा पुन: स्थापना हेतु बाड़ा में रखा गया। तत्पश्चात नर बाघ की रेडियो कॉलरिंग कर 5 मई को नौरादेही वन्य जीव अभ्यारण्य के अनुकूल परिवेश में छोड़ा गया तथा मादा बाघ को 9 जून को रेडियो कॉलर लगाकर वन्य जीव अभ्यारण्य मे छोड़ दिया गया। इस पूरी गतिविधि में वन्य प्राणी शाखा की प्रभारी डॉ. अंजना राजपूत तथा रिसर्च एसोसिएट डॉ. अनिरूद्ध मजूमदार की सक्रिय भूमिका रही। राज्य वन अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों एवं अनुसंधानकर्ताओं के निरिक्षण में पता चला कि बाघ एवं बाघिन, नौरादेही वन्य जीव अभ्यारण्य की परिस्थिति में ढल चुके हैं और सहवास तथा निश्चित अंतराल पर शिकार कर रहे हैं।

संस्थान के वैज्ञानिको के सहयोग से रेडियो कॉलरिंग करते हुए

मॉनीटरिंग की रणनीति बनाते हुए टीम

वन समितियों को लाभांश वितरण

संयुक्त वन प्रबंध के तहत कार्य कर रही वन सुरक्षा समितियों एवं ग्राम समितियों को वर्ष 2017-18 में विदोहित वन क्षत्रों से काष्ठ एवं बांस का लाभांश राशि का 20 प्रतिशत वितरण किया गया। जहाँ वर्ष 2016-17 में काष्ठ का लाभांश 52.58 करोड़ एवं बाँस का लाभांस 3.25 करोड़ रूपये वितरण किया गया था वहीं वर्ष 2017-18 में काष्ठ का लाभांश 28.27 करोड़ रूपये (बालाघाट, बैतूल, हरदा, डिंडोरी, मंडला, खण्डवा एवं सिवनी) के संयुक्त वन प्रबंधन समितियों को किया गया।

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड, नई दिल्ली का क्षेत्रीय सह सुविधा केन्द्र (Regional Cum Facilitation Center) Central Region Madhya Pradesh & Chhatishgarh का लोकार्पण हेतु कार्यशाला का आयोजन

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर में दिनांक 18 मई 2018 को संस्थान के सभागार में राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड, नई दिल्ली का आषैधीय पौधों से संबंधित क्षेत्रीय सह सुविधा केन्द्र का लोकार्पण कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला का शुभारंभ छत्तीसगढ़ राज्य औषधीय पादप बोर्ड के अध्यक्ष श्री आर. पी. सिंह, उपाध्यक्ष डॉ. जे. पी. शर्मा, प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख मध्यप्रदेश श्री रवि श्रीवास्तव, मुख्य कार्यपालन अधिकारी, राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड, नई दिल्ली, श्रीमती सोमिता विश्वास प्रधान मुख्य वन संरक्षक कार्य आयोजना मध्यप्रदेश, श्री जे. के. मोहन्ती, प्रधान मुख्य वन संरक्षक, अनुसंधान एवं प्रशिक्षण मध्यप्रदेश, डॉ. यू. प्रकाशम, क्षेत्रीय सह-सुविधा केन्द्र मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के क्षेत्रीय संचालक डॉ. पी. के. शुक्ला, राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर के संचालक डॉ. धर्मेन्द्र वर्मा एवं अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक, कार्य आयोजना जबलपुर, श्री सी. एच. मरालीकृष्ण की उपस्थिति में संपन्न हुआ।

औषधीय पौधों की क्षेत्रीय सह सुविधा केन्द्र राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर के माध्यम से अपने उद्देश्यों की पुर्ति के लिए कार्य करेगा। यह केन्द्र, मध्यप्रदेश तथा छत्तीसगढ़ राज्य में पाई जाने वाली औषधीय पौधों के संरक्षण के लिए बेहतर समन्वय स्थापित करेगा। इस केन्द्र में औषधीय पौधों की खेती का तकनीकी प्रशिक्षण, औषधीय उत्पाद का उचित बाजार मूल्य एवं शोध आदि के कार्य किये जाएंगे।

इस कार्यशाला में मध्यप्रदेश वन विभाग के अधिकारी, क्षेत्रीय अमला, औषधीय पौधों की खेती करने वाले कृषक, वैद्य, व्यापारी, अनुसंधानकर्ताओं ने सक्रिय तथा व्यापक रूप से भाग लिया।

कार्यशाला के दौरान केन्द्र की वेबसाईट का भी शुभारम्भ किया गया तथा राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर द्वारा प्रकाशित तकनीकी पत्रिका का भी विमोचन किया गया। कार्यशाला में औषधीय पौधों से संबंधित पोस्टर प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसमें प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया।

वन अधिकारियों, द्वारा उद्‌बोधन

कार्यशाला में अतिथि एवं प्रतिभागी

कार्यशला में प्रस्तुत पोस्टरों का अतिथी द्वारा अवलोकन

संस्थान द्वारा प्रकाशित तकनीकी पत्रिका का विमोचन

राज्य वन अनुसंधान संस्थान जबलपुर में प्रशिक्षण

"Knowledge upgradation and skill development of field foresters, forest dependent communities and resource person through lab to land training modules" के अंतर्गत ''ऊर्जावन निर्माण हेतु क्षेत्र चयन, भूमि तैयारी, बीज उपचार एवं बीज बोनी'' के संबंध में दिनांक 27.04.2018 से 28.04.2018 एवं दिनांक 23.05.2018 से 24.05.2018 तक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमे जबलपुर सिवनी मंडला डिंडोरी रीवा सतना बालाघाट सिंगरौली से 10 10 वन अधिकारियों एवं कर्मचारियों, कुल 93 प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण दिया गया। उर्जावान निर्मित करने तथा वनों पर जलाऊ लकड़ी के दबाव को कम करने, साथ ही दुधारू पशुओं के चारे की आपूर्ति में सहायक सिद्ध होगी।

माह अप्रैल एवं मई 2018 में महुआ फूल उत्पादन, संग्रहण, भण्डारण एवं परिवहन से संबंधित प्रशिक्षण एव प्रदर्शन, अलीराजपुर 03.04.2018 मंडला 17.04.2018, सीधी 06.05.2018, सिंगरौली 07.05.2018 वनमण्डल के महुआ फूल संग्राहकों एवं प्रबंधकों को गुणवत्ता युक्त फूल संग्रहण एवं प्रसंस्करण की उपयोगी विधियों के साथ-साथ भण्डारण के समय महुआ फूल की गुणवत्ता को खराब होने से बचाने के संबंध में विस्तृत जानकारी प्रदाय की गई। इस प्रशिक्षण में प्रत्येक वनमंडल से 60 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर के द्वारा मध्यप्रदेश राज्य वन विकास निगम के वर्षा आधारित सागौन वृक्षारोपण की विभिन्न स्थल गुण श्रेणियों एवं रोपण की विभिन्न विधियों के विरलन एवं पूर्ण पातन की अनुकूलतम आयु की गणना हेतु अध्ययन

वन विहार राष्ट्रीय उद्यान में आदमखोर नर बाघ का आगमन

दिनांक 04 जून 2018को दोपहर 1.30 बजे नर बाघ शावक को बांधवगढ टाईगर रिजर्व की खितोली परिक्षेत्र से डॉ. जे.पी. त्रिपाठी एवं श्री मनोज कटारिया के नेतृत्व में उनकी टीम द्वारा वन विहार लाया गया। इस बाघ की उम्र लगभग 6 वर्ष बताई जा रही है। उक्त आदमखोर बाघ को खितोली के नाम से जाना जाता है। बांधवगढ टाईगर रिजर्व में वर्ष 2014 में दो नर बाघ शावकों द्वारा 4 जन हानि के दुर्घटना के पश्चात 27 अक्टूबर 2014 को रेस्क्यू कर दोनों नर बाघ को बहेरहा बाड़े में रखा गया था। इनमें से एक बाघ जिसे बंधु के नाम से जाना जाता है । जिसे निर्णय अनुसार दिनांक 27 जून 2016 को वन विहार राष्ट्रीय उद्यान लाया गया था, वर्तमान में वन विहार में डिस्प्ले बाड़े में रखा गया है। आज लाया गया बाघ, बंधु का ही भाई है अर्थात एक ही संतति हैं। वन विहार में इसका नाम बांधवगढ के नाम पर रखा गया है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि तेंदूपत्ते के समय खितोली में एक टीचर जो कि शौच आदि के लिये खुले क्षेत्रा में गया था, जिसे चौपाया समझकर उक्त दोनों बाघों ने उस पर हमला कर दिया था। तत्समय उक्त दोनों बाघों को आदमखोर घोषित करते हुये दिनांक 27 अक्टूबर 2014 को पकड़ा गया था। इस घटना के बाद खितौली परिक्षेत्र में भारी जन आक्रोश था। परिणाम स्वरूप आक्रोशित भीड़ द्वारा परिक्षेत्र कार्यालय को जला दिया गया था। आज लाये गये उक्त नर बाघ को वन विहार में क्वेरेंटाईन में सतत निगरानी में रखा गया है। वन्यप्राणी चिकित्सक द्वारा उसका स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। बताया जा रहा है कि उक्त बाघ पूर्णत: स्वस्थ हालत में है।

वन विहार राष्ट्रीय उद्यान में माधव नर तेंदुआ शावक की आमद

एक नर तेदुंआ शावक को दिनांक 4 जून 2018 को उप वनमंडलाधिकारी बड़वानी एवं पशु चिकित्सक की देखरेख में वन विहार लाया गया। इस शावक का इलाज टेलीमेडीसिन के माध्यम से वन विहार के वन्यप्राणी चिकित्सक डॉ. अतुल गुप्ता द्वारा किया गया। बताया जा रहा है की शावक पार्वो संक्रमण से ग्रसित था परन्तु अब वह इलाज के पश्चात पूर्णत: स्वस्थ है। इस तेंदुआ शावक को बड़वानी वनमंडल की बावनगजा बीट से दिनांक 15 मई 2018 को रेस्क्यू कर बड़वानी में रखा गया था।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि नर तेंदुआ शावक का दिनांक 16 मई 2018 को डायरेक्टर स्कूल आफ वाईल्ड लाईफ फॉरेंसिक एंड हैल्थ नानाजी देशमुख वेटनरी यूनिवर्सिटी सिविल लाईन जबलपुर को बॉयोलाजिकल सेम्पल डिसीज डाग्नॉसिस् हेतु ब्लड सेम्पल 3 नग (ई.डी.टी.ए. वायल एवं क्लट एक्टीवेटर वायल तथा सिरम), आईस्वेब 2 नग भेजे गये थे, जिसकी रिपोर्ट 18 मई 2018 को प्राप्त हुई, जिसमें बीमारी पार्वो वायरल पॉजीटिव पाई गई।

दिनांक 30 मई 2018 को पुन: डायरेक्टर स्कूल आफ वाईल्ड लाईफ फॉरेंसिक एंड हैल्थ नानाजी देशमुख वेटनरी यूनिवर्सिटी सिविल लाईन जबलपुर को बॉयोलाजिकल सेम्पल डिसीज डाग्नॉसिस् हेतु ब्लड सेम्पल 2 नग (ई.डी. टी.ए. वायल एवं ब्लड सिरम), आईस्वेब 1 नग भेजे गये थे, जिसकी रिपोर्ट 2 जून 2018 को प्राप्त हुई, जिसमें बीमारी पार्वो वायरल निगेटिव पाई गई। अर्थात शावक अब स्वस्थ था। तदोपरांत उक्त नर तेंदुआ शावक को वन विहार भेजने का निर्णय लिया गया।

Herpetology workshop held in Van Vihar national park

Herpetology workshop was organized by WWF-India, MP & CG State Office and Van Vihar National Park. The workshop addressed issues pertaining to basic introduction of reptiles, consequences and prevention of snake bite and crimes related to reptiles in india. The workshop started at 10 AM in Van Vihar. There were 18 participants who participated in the workshop along with WWF volunteers. Director of Van Vihar Sameeta Rajora and the Assistant Director Shri A.K. Jain inaugurated the workshop. Nikhil Raut representative of WWF presented a session on reptiles along with Shri Ritesh Sirothia incharge STSF, who took a session on the crime related to reptiles. The participants were made aware about the prevention of snake bite, the protocol of snake rescue and need of conservation using various audio-visual aids. At the end of the workshop, certificates for participation were distributed.

पेंथर रेस्क्यू ऑपरेशन

यह घटना दिनांक 06 अप्रैल 2018 की है जब एक तेंदुआ एक गाँव में घुस आया था। अपरान्ह लगभग 3 बजे वन संरक्षक विदिशा द्वारा संचालक एवं मुख्य वन संरक्षक वन विहार भोपाल को सूचित कर अनुरोध किया गया कि वनमंडल विदिशा के अंतर्गत अहमदपुर ग्राम में एक तेंदुआ घुस आया है तथा पेड़ के ऊपर चढ़ गया है, जिससे ग्रामीणों में भय एवं आक्रोश व्याप्त है। तेंदुआ की निजी सुरक्षा एवं ग्रामवासियों की सुरक्षा हेतु उसे वहाँ से रेस्क्यू करना आवश्यक हो गया था। संचालक महोदया द्वारा प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्यप्राणी) से दूरभाष पर अनुमति ली गई एवं रेस्क्यू दल को मौके पर पहुँचने के निर्देश दिया गया। वन विहार का रेस्क्यू दल सहायक संचालक, वन्यप्राणी चिकित्सक एवं अन्य सदस्यों के साथ ग्राम अहमदपुर पर पहुँचा तथा मौके का निरीक्षण कर वनसंरक्षक विदिशा, पुलिस, प्रशासन एवं स्थानीय संसाधनों की मदद से तेंदुआ जो कि 70 फीट ऊंचाई पर था, के रेस्क्यू की योजना तैयार की गई।

रात्रि लगभग 9.30 बजे ग्रामीणों को सुरक्षित स्थान पर भेजकर वन्यप्राणी चिकित्सक, सहयोगी सदस्य के साथ जिला प्रशासन द्वारा उपलब्ध कराई गई। बिजली विभाग की लिफ्ट से तेंदुआ के समानांतर ऊँचाईं पर पहुँच कर तेंदुआ को सावधानीपूर्वक ट्रेंक्यूलाइज किया गया एवं फायर टेंडर के पानी बौछार की सहायता से उसे नीचे उतारा गया। नीचे आते ही रेस्क्यू दल द्वारा उसे जाल में लपेटकर रेस्क्यू वाहन में डाल दिया गया । संपूर्ण कार्यवाही का मार्गदर्शन संचालक वन विहार रा.उ. द्वारा किया गया। रेस्क्यू ऑपेरशन पूर्ण होने की जानकारी प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्यप्राणी) को दी गई एवं निर्देशानुसार रेस्क्यू तेंदुआ को वन विहार लाया गया और उसे पेंथर हाउसिंग में सुरक्षित रखा गया।

रेस्क्यूड पेंथर को परीक्षण में दिनांक 12 अप्रैल 2018 तक रखा गया तथा स्वस्थ पाये जाने पर प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्यप्राणी) के निर्देशानुसार उसे दिनांक 13 अप्रैल 2018 को अब्दुल्लागंज वनमंडल के प्राकृतिक रहवास में छोड़ दिया गया।

Promotion and Retirements

भारतीय वन सेवा के अधिकारियों की पदोन्नति (अप्रैल–जून)

श्री रवि श्रीवास्तव, प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख

श्री जव्वाद हसन, प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख

श्री विनय कुमार वर्मन, प्रधान मुख्य वन संरक्षक/प्रबंध संचालक मध्यप्रदेश राज्य बीज एवं फार्म विकास निगम, भोपाल

श्री राजेश श्रीवास्तव, प्रधान मुख्य वन संरक्षक भोपाल (उत्पादन)

श्री सुधीर कुमार, प्रधान मुख्य वन संरक्षक (अनुसंधान एवं प्रशिक्षण), भोपाल

श्री एस.पी. रयाल, प्रधान मुख्य वन संरक्षक (कार्य आयोजना एवं वन भू–अभिलेख), भोपाल

श्री ए.बी. गुप्ता, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक, मध्यप्रदेश राज्य वन विकास निगम (प्रतिनियुक्ति)

श्री धीरेन्द्र भार्गव, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक (जे.एफ.एम. एवं वन विकास अभिकरण), भोपाल

श्री शिव प्रसाद शर्मा, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक(उत्पादन), भोपाल

श्री शुभ रंजन सेन, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक, मध्यप्रदेश राज्य वन विकास निगम भोपल (प्रतिनियुक्ति)

श्रीमती कंचन देवी, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक, मध्यप्रदेश राज्य वन विकास निगम भोपल (प्रतिनियुक्ति)

श्री पंकज अग्रवाल, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन भू–अभिलेख), भोपाल

भारतीय वन सेवा के अधिकारियों की सेवानिवृत्ति (अप्रैल–जून)

डॉ. अनिमेष शुक्ला, प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख

श्री रवि श्रीवास्तव, प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख

श्री जितेन्द्र अग्रवाल, प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्यप्राणी)

डॉ. आर.के. गुप्ता, प्रधान मुख्य वन संरक्षक (उत्पादन)

श्री सुधीर कुमार, प्रधान मुख्य वन संरक्षक (अनुसंधान एवं प्रशिक्षण)

श्री बी.पी. गुप्ता, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक

श्री बी.पी.एस. परिहार, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक (राज्य वन विकाश निगम)

श्री शरद तिवारी, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक (निगरानी एवं मुल्यांकन, भोपाल)

श्री निरंकार सिंह, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक (फारेस्ट मै. एवं वि.इ., भोपाल)

श्री व्ही.के. नीमा, मुख्य वन संरक्षक, भोपाल वृत्त

श्री केशव सिंह, वन संरक्षक (वल्लभ भवन, भोपाल)

विभागीय समाचार एवं गतिविधियां

सतपुड़ा टाइगर रिवर्ज की प्रशंसा

सतपुड़ा टाइगर रिजर्व में तीन दिवसीय निरीक्षण के लिए आई केन्द्रीय सुरक्षा ऑडिट टीम ने यहां की व्यवस्थाओं और गतिविधियों की प्रशंसा की है। कर्नाटक के पूर्व मुख्य वन्यप्राणी अभिरक्षक श्री बी.के. सिंह के नेतृत्व में दो दलों ने तीन दिन टाइगर रिवर्ज का सघन भ्रमण किया। इस दल ने 70 पेट्रोलिंग कैम्प तथा 10 रेंज कार्यालयों का निरीक्षण किया। टीम में एक विदेशी विशेषज्ञ भी शामिल थे। आडिट टीम ने 42 गांवों के पुर्नस्थापन और उनसे संबंधित विकास कार्यो की भी प्रशंसा की।

वृक्षारोपण का विशेष अभियान

माननीय मुख्य मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहन ने बताया है कि प्रदेश में नर्मदा तथा अन्य नदियों के केचमेंट क्षेत्र में 15 जुलाई से पौधारोपण किया जाएगा। नमामी देवी नर्मदे यात्रा की प्रथम वर्षगांठ के अवसर पर दिनांक 15 मई, 2018 को होशंगाबाद में आयोजित कार्यक्रम में उन्होंने यह जानकारी दी।

अब ऑनलाईन प्रकरण पंजीबद्ध किये जाएंगे

विभाग द्वारा अब आपराधिक प्रकरण (पीओआर) ऑनलाईन दर्ज किये जाएंगे। वर्तमान में पीओआर दर्ज करने की मैन्युअल व्यवस्था है। नवीन प्रक्रिया प्रायोगिक तौर पर प्रदेश के 16 वनमण्डलों में प्रारंभ की जाएगी। यह सेवा प्रयोग के तौर पर भोपाल, देवास, इंदौर, बड़वाह, होशंगाबाद, दक्षिण बैतूल, दक्षिण छिन्दवाड़ा, दक्षिण सिवनी, बालाघाट, छतरपुर, रीवा, सतना, ग्वालियर, शिवपुरी, देवास तथा इंदौर वनमण्डल में लागू की जाएगी।

वन विभाग के ऊपर बनी डॉक्यूमेंट्री को सराहना

वन विभाग के ऊपर तैयार की गई डॉक्यूमेंट्री फिल्म ने लास एंजिल्स सिने फेस्ट-2019 में सेमी-फायनल में स्थान पाया है। फिल्म मध्य प्रदेश के जंगलों में काम करने वाले मेहनतकश और बहादुर वन रक्षकों पर केन्द्रित है। इस डॉक्युमेंटरी का शीर्ष '' स्माइल ऑफ़ फारेस्ट'' रखा गया है और इसे शशिधर वैम्पाला ने बनाया है।

नवाचार

श्री अशोक भार्गव के द्वारा पर्यावरण के प्रति सराहनीय पहल

श्री अशोक भार्गव, ग्राम बरेण्डा, तहसील सिरोंज, जिला विदिशा के रहने वाले हैं। वर्तमान में इनकी आयु 76 वर्ष है। श्री भार्गव पिछले 35 वर्षों से नेत्रहीन है एवं कानों से भी कम सुनाई देता है। पर्यावरण के प्रति इनका लगाव एवं पहल सराहनीय है। श्री भार्गव द्वारा निजी 25 बीघा भूमि पर लगभग 25000 पौधों का रोपण कर पर्यावरण के प्रति अपनी मिशाल कायम की है। इनके द्वारा यूकेलिप्टिस के लगभग 15000, सागौन 8500 एवं अमरूद, मुनगा, अनार आदि प्रजातियों के पौधे रापित किये गये हैं तथा इनके द्वारा इस वर्ष तक लगभग 40000 पौधे रोपित करने का लक्ष्य रखा गया है। साथ ही इनके द्वारा अपने खेत में एक तालाब तैयार किया गया है, जिसमें पूरे वर्ष पानी रहता है, जिससे समस्त रोपित पौधों की सिंचाई हो सकती है। विगत वर्ष वन मण्डल विदिशा के अंतर्गत कृषि वानिकी से कृषक समृद्धि योजना के तहत उनके द्वारा 5000 पौधों का रोपण अपने खेत में किया गया है। इस वर्ष उनके द्वारा स्वयं हाइब्रिड मुनगा के बीज क्रय कर पौधे तैयार कराए गए हैं, जिनका रोपण वे अपने खेत में करेंगे।

श्री अशोक भार्गव का कहना है कि कोशिश करते रहने से हर कार्य पूर्ण होता है, पर्यावरण संरक्षण हम सबका दायित्व है। श्री भार्गव के द्वारा पर्यावरण के प्रति यह पहल सराहनीय है, जो पर्यावरण प्रेमियों एवं किसानों के लिए प्रेरणादायक है।

कचरे से हरियाली

जो भी पोलीथिन निकलती हैं, सामान्यत: हम फेंक देते हैं, पोलीथिन फेंकने से नुकसान है कि पोलीथिन नाली चौक करती है, जमीन की उर्वरा शक्ति कम करती है तथा जलाने पर वायु प्रदूषण करती हैं। पोलीथिन में पौधे उगाकर उसकी रिसाईक्लिंग हो सकती है।

विदिशा सामान्य वन मण्डल अंतर्गत समस्त वन परिक्षेत्र मुख्यालयों में, विदिशा शहर के एस.ए.टी.आई. इंजीनियरिंग कॉलेज, स्मृति उद्यान, स्कूल आदि में अनुपयोगी थैलियों को एकत्रित कर नर्सरी तैयार की जा रही है। इन नर्सरी में तैयार पौधे स्कूलों के छात्रों को निशुल्क वितरित किये जा रहे हैं और इससे प्रेरित होकर बच्चे, स्कूल एवं घरों में पोलिथिन को एकत्रित कर पौधे तैयार करेंगे।

किसानों की ओर से:

यह कहानी एक ऐसे किसान की है जिन्होंने कृषि वानिकी से कृषक समृद्धि योजना से लाभ लेकर पारम्परिक कृषि को चुनौती दी है। श्री लाकेश सूर्यवंशी जी भोपाल के रहने वाले हैं, वे अपनी निजी भूमि (2 एकड़) पर Agroforestry के intercropping विधि से कृषि कर रहे हैं। उनकी 2 एकड़ की भूमि ग्राम निपानिया, जिला–भोपाल में स्थित है। उनका कहना है कि उनकी यह भूमि पहले अनुपयोगी बंजर भूमि थी, उन्होंने वर्ष 2017 के जुलाई महीनें में कृषिवानिकी से कृषक समृद्धि योजना के तहत 2000 यूकेलिप्टस के उच्च गुणवत्ता के पौधे रोपित किये। यूकेलिप्टस के पौधों से पौधों के बीच की दूरी 5 फिट एवं कतारों के बीच की दूरी 12 फीट रखा, ताकि मध्य भाग में ट्रैक्टर एवं अन्य साधनों से आसानी से जुताई की जा सके। वर्ष 2017 में वर्षा ऋतु में उन्होंने तुअर दाल, उड़द दाल एवं मूंगफली की इंटरक्रोपिंग की तथा माह नवम्बर में गेंहू की बुआई की जिसमें उन्होंने लगभग 12000 रूपये के गेहूं एवं 10000–12000 रूपये की सब्जियां विक्रय किये।

इस वर्ष उनके यूकेलिप्टस लगभग 7 से 8 फिट के हो चुके हैं, इसके अलावा उन्होंने खीरा, सब्जियाँ, गेंदे के फूल इत्यादि रोपित किया है। उन्हें इस वर्ष और अच्छी फसल होने का अनुमान है। उनके द्वारा वर्मीकम्पोस्ट बनाने का कार्य भी आरम्भ किया जा रहा है। उनके साक्षात्कार से हमें पता चला कि इस कार्य में फॉरेस्ट विभाग से उनको पूरा समर्थन मिला है खासकर श्रीमती उषा मिश्रा जी (फॉरेट रेंजर, भोपाल)के मार्गदर्शन से उन्होंने इस प्रकार की खेती में सफलता हासिल की है।

इस प्रकार श्री लाकेश जी के इस पहल से पता चलता है कि कृषि वानिकी से कृषक समृद्धि योजना का सदुपयोग पर्यावरण के साथ–साथ किसानों के लिए भी लाभकारी है।

हरित साहित्य

'खड़े हों वृक्ष जिसके तट ''

न ये मस्जिद जरूरी है न वो मंदिर जरूरी है।
किसी बेघर का बन जाये कहीं पर घर जरूरी है।

नहीं तो पीढ़ियाँ तरसेंगीं फिर अपनी विरासत को,
हरी रखना हमें ये घाटियाँ बंजर जरूरी है।

रहे पर्यावरण जो संतुलित तो वन्य प्राणी संग,
नदी, घाटी, पवन, पंछी, विटप, तरूवर जरूरी है।

खड़े हों वृक्ष जिसके तट घने ऊँचे गगनचुंबी,
नदी जंगल में वो बहती हुई सुंदर जरूरी है।

जहाँ तामीर होना है वहाँ तामीर होने दें,
सियासी हाथ से रखना कहाँ पत्थर जरूरी है।

नहीं सुंदर लगेगी फिर ये जंगल नाम की दुल्हन,
बचा रखना ये जंगल नाम का जेवर जरूरी है।

कहीं धोखा न खा जायें बहुत बेखौफ होकर हम,
बचा रहना हमारे मन में थोड़ा डर जरूरी है।

जो मुठ्ठी भर बचे जंगल उन्हें आगे बचा लें हम,
इसी संकल्प की पगड़ी हमारे सर जरूरी है।

बड़ा सा पेड़ आँगन का जो हमको छाँह तो दे ही,
बसेरे हों परिन्दों के बहुत जिसपर जरूरी है।

जहाँ पर भी दिखे आँसू किसी की आँख से बहता,
वहाँ पर आपका रूमाल निकले तर जरूरी है।

प्रकृति को पूजना होगा इसे हम इस तरह समझें,
किसी भी घर में जैसे एक पूजाघर जरूरी है।

रत्नदीप खरे
वनविस्तार अधिकारी झाबुआ

मोहते मन वन सघन वे।

धूल से मैले हुये वे अजगरी सड़को किनारे,
दूर तक फैले हुये वे बस विधाता के सहारे।
मूक पथरीली धरा में प्राण के लघु बीज बोते,
दूसरों का हित उगाते और अपने श्वास खोते।
सजग प्रहरी से सदा ही साधते पर्यावरण वे।
मोहते मन.....

वे कतारे में खड़े हैं नम–रूखे और सूखे,
आग–आंधी से लड़े हैं खूब प्यासे और भूखे।
उड़ गये उनके सरों से मेघ भी बरसे बिना ही,
वे ना टूटे, वे ना रूठे, जी लिये तरसे बिना ही।
छांव देते हर पथिक को स्वयं पीकर भी तपन वे।
मोहते मन.....

नग्न धरती ही बिछौना, ओढ़नी नीला गगन है,
झोपड़ी उनकी पड़ौसिन और टीलों पर शयन है।
क्या कहूं, कैसे, कहां से जीवनी–रस सींचते हैं।
हम ना उसको देख पाते पर हमें देते नयन वे।
मोहते मन.....

कब उन्हें मधुमास टेरे, नित्य ही पतझार घेरे,
धूप–पानी से, हवा से खेलते संझा–सवेरे।
वे बदलते मौसमों को झेलते हैं तान सीना,
ओस बनकर मौन झरता रोज ही ठंडा पसीना।
कंटको का ताज पहने एक उजड़ा–सा चमन वे।
मोहते मन.....

मन कहे उनको ना त्यागूं, तन कहे नाता न जोडूँ,
व्यर्थ भावुकता न बरतो, धन कहे तोडूँ–मरोडूँ।
ये उगे जिस मृत्तिका में, माथ से उसको लगा लूं,
रो पडूँ जड़ से लिपट कर, प्रेम–करूणा को जगा लूं।
क्रूरता के आवरण में शांत, सपनों में मगन वे।
मोहते मन.....

नीलयकांत सराफ
आई.आई.एफ.एम.

बूंदों की बेला

आई देखो आई बूंदों की बेला
लो फिर चली आई, बिन बुलाए
जाने के लिए, मेहमान–सी बूँदों की बेला.....

सुरमयी, रागमयी, अनुरागमयी
राजतरंगिणी के घाटों से रिसकर
जलती धरती को नहलाने आई, बूँदों की बेला.....

आकाश में बजी, बादलों की शहनाई
चंचल दामिनी परिहास करे
धरती के आंचल में रंगोली भरने, बूँदों की बेला.....

बदल का मन, उमड़–घुमड़ रहा है
जी–भर बरसेगा, हर घर–आंगन में
जीवन में नव उल्लास भरने आई, बूँदों की बेला.....

नियति से निश्चित है, इसका आना–जाना
फिर तन–मन जीवन तरसेगा
जायेगी, फिर आने को मेहमान–सी, बूँदों की बेला...

रामशंकर पाटिल,
कार्यालय प्रधान मुख्य वन संरक्षक (उत्पादन)
सतपुड़ा भवन, भोपाल

अखबारों के आइनों से

वन्य प्राणियों को बचाने के काम आएगा पारधियों का कौशल

वन विभाग ने शुरू की प्रशिक्षण की पहल

भोपाल, 10 अप्रैल. वन विभाग ने वन्य-प्राणी रक्षा से संबंधित कार्यों में पारधियों को जोड़ते हुए अनूठी पहल की है. पारधी समुदाय के जानवर पकड़ने के परम्परागत ज्ञान का उपयोग वन विभाग ने भटके हुए बाघ, तेंदुआ, नील गाय आदि को पकड़ने और वन्य-प्राणी संरक्षण के लिये करना शुरू किया है.

पिछले माह भोपाल वृत्त में तेंदुए को पकड़ने में पारधी समुदाय की मदद ली थी. उज्जैन में 11 अप्रैल को नील गाय पकड़ने के संबंध में कार्यशाला की जा रही है, जिसमें लगभग 10 पारधी भाग लेंगे. कार्यशाला में पारधियों की मदद से नील गाय को पकड़ने के लिये एक जाल बनाया जायेगा, जो स्वयं पारधियों के लिये भी नया अनुभव होगा. पारधी नील गाय को पवित्र पशु मानते हैं. उनको आश्वासन दिया गया है कि इससे नील गाय को कोई शारीरिक क्षति नहीं पहुँचेगी.

प्रधान मुख्य वन संरक्षक वन्य-प्राणी जितेन्द्र अग्रवाल ने बताया कि वन विभाग ने परम्परागत रूप से शिकार कर आजीविका निर्वहन करने वाले पारधी समुदाय के साथ पिछले माह भोपाल में एक बैठक की. विभाग ने उन्हें वन्य-प्राणी शिकार के बदले आजीविका अर्जन के लिये 3 प्रस्ताव दिये थे. इनमें उनके ज्ञान और अनुभवों के आधार पर गाइड बनाना, उनकी ट्रेकिंग कुशलता के मद्देनजर रेस्क्यू दस्तों में शामिल करना और फसलों को नष्ट करने वाले जानवरों को पकड़ने के लिये उनकी मदद से जाल बनाना और जंगल में छोड़ना शामिल है.

महुआ फूल बीनने वालों को भी मिलेंगी चरण पादुका

भोपाल, 19 अप्रैल. मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने सिंगरौली के सरई में तेंदूपत्ता संग्राहक एवं श्रमिक सम्मेलन में वन क्लिक से 2 लाख 40 हजार तेंदूपत्ता संग्राहकों के बैंक खाते में सीधे 26 करोड़ रुपये का तेंदूपत्ता बोनस हस्तांतरित किया.

चौहान ने सवा लाख तेंदूपत्ता संग्राहकों को चरण-पादुकाएँ एवं पानी की बोतल दी और हितग्राहियों को वनाधिकार-पत्रों का वितरण किया. उन्होंने संग्राहक कलावती तथा दिगपाल को स्वयं चरण-पादुकाएँ पहनाईं. चौहान ने सरई में बायपास निर्माण और आईटीआई खोलने की घोषणा करते हुए कहा कि तेंदूपत्ता संग्रहण की मजदूरी में भी वृद्धि की गई है. अब एक मानक बोरा के लिये 1250 रुपये के स्थान पर 2000 रुपये दिये जायेंगे. उन्होंने कहा कि महुआ फूल बीनने वालों को भी चरण-पादुकाएँ दी जायेंगी. चौहान ने हर पात्र व्यक्ति को वनाधिकार-पत्र का लाभ देने के निर्देश दिये.

मुख्यमंत्री ने कहा कि सिंगरौली जिले में 4 लाख से अधिक श्रमिकों का राज्य शासन की योजना में पंजीयन हुआ है. इन्हें शिक्षा, उपचार और प्रसूति सहायता सहित अन्य योजनाओं में सहायता दी जायेगी. उन्होंने कहा कि कच्चे मकान और झोपड़ी में रहने वाले श्रमिकों को अगले 4 साल में पक्के मकान बनवाकर दिये जायेंगे.

नौरादेही अभयारण्य में मिली 150 से अधिक पक्षी प्रजाति

भोपाल, 3 अप्रैल. नौरादेही वन्य प्राणी अभयारण्य में मिरेकल फॉर नेचर एण्ड कन्जरवेशन जबलपुर एवं नौरादेही वन्य प्राणी अभयारण्य, वन मंडल सागर के संयुक्त तत्वावधान में पक्षियों की गणना की गई है.

इसमें 3 जिलों के 1200 किलोमीटर क्षेत्र में फैले अभयारण्य में 150 से अधिक पक्षियों की प्रजातियाँ मिली हैं. इनमें डस्की ईगल आउल, पेंटेड सैंडग्राउज पहली बार देखे गये और गिद्धों की तीन प्रजातियाँ इंडियन गिद्ध, किंग वल्चर, इंडियन वल्चर मिलीं. बाकी पक्षियों में रिवेरस टर्न, मोर, ग्रीन सैंडपाइपर, क्रेस्टेड ट्रीस्विफ्ट, क्रेस्टेड बंटिंग, सल्फर बेलीड वॉब्लर, पेंटेड स्टॉर्क, यूरेशियन, डार्टर, ब्राउनफिश आउल, बोनिलीईगल, ओरियन्टल हनीबजार्ड आदि भी देखे गये.

वन रोपणियों की ऑनलाइन अनुश्रवण व्यवस्था का शुभारंभ

भोपाल (प्रसं)। वन विभाग की रोपणियों के ऑनलाइन अनुश्रवण व्यवस्था का प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख डॉ. अनिमेष शुक्ला ने शनिवार को सतपुड़ा भवन स्थित वन मुख्यालय में शुभारंभ किया।

प्रदेश के 11 अनुसंधान एवं विस्तार वन वृत्तों की प्रमुख रोपणियों में जहां इंटरनेट सुविधा उपलब्ध है। इसके माध्यम से इन रोपणियों में पौधों की गुणवत्ता को बेहतर बनाने की दिशा में वन मुख्यालय से अनुश्रवण एवं मूल्यांकन किया जा सकेगा। डॉ. शुक्ला ने इस पहल के लिए संबंधित अधिकारियों को बधाई दी। इस अवसर पर रवि श्रीवास्तव, प्रबंध संचालक, म.प्र. राज्य वन विकास निगम, शाहबाज अहमद, प्रधान मुख्य वन संरक्षक (अनुसंधान विस्तार एवं लोक वानिकी), रमेश कुमार गुप्ता, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक (प्रशासन-2) तथा डॉ. पीसी दुबे, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक (अनुसंधान विस्तार एवं लोक वानिकी) उपस्थित थे.

आजीविका पन्ना जिले के दक्षिणी वन मंडल में आदिवासियों की रोजी-रोटी का जरिया है महुआ

महुआ फूलों से महका जंगल, आदिवासियों की जिंदगी गुलजार

पीपुल्स संवाददाता • पन्ना
editor@peoplessamachar.co.in

पीपुल्स समाचार 10 APR 201

मध्यप्रदेश में इन दिनों भले ही लोग गर्मी से हलाकान हों, पर पन्ना जिले के एक हिस्से के आदिवासियों की रोजी-रोटी के लिए, ये मौसम खासा गुलजार होता है। गर्मी के इस मौसम में जिले का जंगल महुआ फूलों की मादक गंध से महक रहा है।

सुबह 5 बजे से ग्रामीण महुआ बीनने के लिये जंगल की ओर निकल पड़ते हैं। जिले के दक्षिण वन मंडल के अंतर्गत आने वाले कल्दा पठार में ... जरिया है। हालांकि शराब बनाने में उपयोग किए जाने वाले महुआ के अलावा भी यहां के जंगल में हर ... मौसम में महुआ वृक्षों से सफेद रसभरे फूल टपकते हैं। इन फूलों को एकत्र कर आदिवासी सुखाते हैं, जिससे ...

फाइल फोटो

खेती-किसानी से ज्यादा वनोपज पर निर्भर

पन्ना जिले के इस क्षेत्र के लोग खेती किसानी से कहीं ज्यादा वनोपज पर आश्रित रहते हैं। जिला मुख्यालय से करीब 100 किमी दूर स्थित पहाड़ी क्षेत्र कल्दा पठार के करीब 40 गांव एक समय में पहुंचविहीन थे, पर अब यहां पुल और सड़क मार्ग की व्यवस्था कर दी गई है।

बना रहता है भालुओं के हमले का खतरा

हालांकि पन्ना टाईगर रिजर्व के बफर क्षेत्र और कल्दा पठार के इस जंगल में भालुओं का खतरा हर समय बना रहता है। महुआ फूल भालुओं का प्रिय भोजन है, इसलिये महुआ फूल बीनने जंगल जाने वालों का आमना-सामना भालुओं से भी हो जाता है।

15 से 20 रुपए किलो बिक जाता है महुआ. ... आदिवासी ने बताया कि अमदरा, मैहर, पवई व सलेहा के व्यापारी यहां आदिवासियों से महुआ खरीदकर ले जाते हैं। सीजन में एक व्यक्ति 5 से 6 क्विंटल महुआ इकट्ठी कर ...

आयोजन राष्ट्रपति ने गुना में किया तेंदूपत्ता संग्राहकों के सम्मेलन का शुभारंभ, कहा-

जंगल ही पालक है, आदिवासियों से बेहतर यह बात कौन समझ सकता है

पीपुल्स संवाददाता • गुना

राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद रविवार को गुना के बमोरी पहुंचे और तेंदूपत्ता संग्राहक और असंगठित श्रमिक कल्याण सम्मेलन का शुभारंभ किया। राष्ट्रपति ने इस मौके पर कहा कि तेंदूपत्ता संग्रहण कुशलता का कार्य है। आदिवासी भाइयों से अच्छा कौन समझ सकता है कि जंगल ही उनका पालक और रक्षक है। राष्ट्रपति ने अपने भाषण में केंद्र सरकार द्वारा गरीबों और मजदूरों के लिए चलाई जा रही योजनाओं का भी उल्लेख किया। साथ ही तेंदूपत्ता संग्राहकों के लिए मुख्यमंत्री योजना की चर्चा भी की।

सम्मेलन में हितग्राही को प्रमाण-पत्र सौंपते राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद। इस मौके पर राज्यपाल आनंदीबेन पटेल, मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान और उच्च शिक्षा मंत्री जयभान सिंह पवैया भी मौजूद थे।

राष्ट्रपति ने अपने हाथों से विभिन्न योजनाओं से लाभांवित हुए श्रमिकों को प्रमाण पत्र भी सौंपे।

सबसे पहले गरीब व पिछड़े वर्ग की चिंता करें

राष्ट्रपति ने कहा कि सरकार को सबसे पहले गरीब और पिछड़े वर्ग की चिंता करनी चाहिए। उन्होंने मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की जमकर प्रशंसा करते हुए कहा कि प्रदेश सरकार सभी वर्गों को ध्यान में रखकर जो योजनाएं चला रही है, वह काबिल-ए-तारीफ हैं।

सरकार ने हमेशा गरीबों की चिंता की: सीएम

कार्यक्रम में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि मध्यप्रदेश का कोई भी गरीब भूखा न रहे, इसकी चिंता हमेशा से उनकी सरकार ने की है। उन्होंने कहा कि हमने गरीबों के लिए कई योजनाएं बनाई हैं। कोई भी मजदूर बिना पक्के मकान के नहीं रहेगा। हर एक गरीब के पास रहने के लिए जमीन का टुकड़ा होगा।

ये भी थे मौजूद

कार्यक्रम में राज्यपाल आनंदीबेन पटेल, गुना के प्रभारी एवं प्रदेश के उच्च शिक्षा मंत्री जयभान सिंह पवैया, नगरीय विकास एवं आवास मंत्री माया सिंह, उच्चतम न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश आरसी लाहोटी और अन्य गणमान्य अतिथि भी मौजूद थे।

बड़े भाई से मिलने उनके घर भी गए

स्मार्ट सिटी के भूमिपूजन के बाद राष्ट्रपति गुना में ही रहने वाले अपने बड़े भाई रामस्वरूप भारती और परिजनों से मिलने हनुमान कॉलोनी स्थित उनके निवास पर भी पहुंचे। राष्ट्रपति के आगमन को लेकर यहां सुरक्षा के भारी इंतजाम किए गए थे। इस कॉलोनी की किलाबंदी कर दी गई थी। यहां 500 जवान तैनात किए गए थे।

गुना सेवा भारती छात्रावास का किया शिलान्यास

राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने गुना प्रवास के दौरान सेवा भारती संस्था द्वारा जन-सहयोग से बनाये जा रहे सहरिया बालक छात्रावास और अस्पताल मातृ-गृह का शिलान्यास किया। इस दौरान संस्था के पदाधिकारियों को मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने शॉल-श्रीफल से सम्मानित किया।

238 करोड़ रुपए की मिनी स्मार्ट सिटी का किया भूमिपूजन

असंगठित श्रमिक सम्मेलन में भाग लेने के बाद राष्ट्रपति ने गुना के श्यामा प्रसाद मुखर्जी स्टेडियम में हुए नगरपालिका के अभिनंदन समारोह में 238 करोड़ रुपए की मिनी स्मार्ट सिटी का भूमिपूजन किया। कार्यक्रम के दौरान उन्होंने कहा कि उनका ओहदा भले ही बड़ा है, लेकिन उनका व्यक्तित्व बेहद साधारण है।

वन्य प्राणी मैनेजमेंट की प्रयोगशाला बना बांधवगढ़ नेशनल पार्क

मूवमेंट, टेरेटरीज व बिहेवियर पर होगी स्टडी

GIS मैपिंग से होगी अब टाइगर्स की वॉचिंग

प्रदेश टुडे संवाददाता, भोपाल

भोपाल और उसके आसपास घूम रहे बाघों की साइंटिफिक तरीके से मैपिंग व स्टडी की जाएगी, ताकि उनके मूवमेंट, टेरेटरीज सहित बिहेवियर पर नजर रखी जा सके। इसके लिए भारतीय वन प्रबंधन संस्थान (आईआईएफएम) के छात्रों को जिम्मेदारी दी गई है। इस काम की मॉनीटरिंग वाइल्ड लाइफ मुख्यालय के अधिकारी करेंगे। बाघ मूवमेंट असंरक्षित वन क्षेत्र में यह मैपिंग व स्टडी देश में पहली बार की जा रही है। भोपाल में बढ़ रही बाघों की संख्या और उनकी ओवर लैपिंग टेरेटरीज से चिंतित वन विभाग ने अब बाघों की साइंटिफिक तरीके से स्टडी कराने का निर्णय लिया है। अब बाघों की ज्योग्राफिकल इन्फॉर्मेशन सिस्टम (जीआईएस) से मैपिंग की जाएगी। कंजरवेटर भोपाल फॉरेस्ट डा.पीसी तिवारी का कहना है कि इससे बाघों पर सही तरीके से नजर रखी जाएगी। उन्होंने बताया कि जीआईएस मैपिंग व स्टडी से पता चल जाएगा कि कौन सा बाघ किस इलाके में ज्यादा मूव कर रहा है। वहां जाने की वजह क्या है। उसके वाटर बॉडी सोर्स क्या है।

रातापानी सेंचुरी के बाघ स्टडी में नहीं है शामिल

भोपाल व सीहोर वन मंडल में आठ वयस्क बाघ हैं। इसमें दो साल से कम शावकों को शामिल नहीं किया गया है, जबकि आठ नन्हें शावक भी क्षेत्र में मां के साथ मूवमेंट कर रहे हैं। ट्रैप कैमरों और ई-सर्विलांस के आधार की गई स्टडी की रिपोर्ट मुख्यालय ने एनटीसीए को भेज दी है। इस स्टडी में रातापानी सेंचुरी के बाघ शामिल नहीं है। अधिकारियों ने इस बात की पुष्टि की है कि भोपाल वन मंडल के केरवा-मिंडोरा में वर्तमान में बाघटी- 121 बाघिन 213 का एक जोड़ा स्थायी रूप से मूवमेंट कर रहा है।

वनोपज जांच नाके होंगे बंद

अब मोबाइल नाकेबंदी करेंगे वनकर्मी

पत्रिका इंडेप्थ स्टोरी

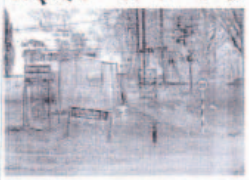

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क

ये नाके होंगे बंद

ये हैं मुख्य चुनौतियां

अब व्यावहारिक नहीं रह गए हैं नाके

यह रही खामियां

वन्यप्राणियों पर नजर रखने के लिए लगेंगे दो हाई मास्ट कैमरे

कवर करना है वन मंडल का छूटा क्षेत्र

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भोपाल

भोपाल, सीहोर और औबेदुल्लागंज वन मंडल के छूट गए क्षेत्र को कवर करने के लिए ई-आई सर्विलांस सिस्टम में दो हाई मास्ट कैमरे और लगाए जाएंगे। जिनमें से एक कलियासोत क्षेत्र में और दूसरा केरवा स्थित कंट्रोल रूम में बनेगा। विभाग से इनकी मंजूरी हो चुकी है।

गौरतलब है कि तीन साल पहले बाघ और अन्य वन्यप्राणियों की सुरक्षा के साथ, जंगल की हर गतिविधि पर नजर रखने के लिए लगाए गए सर्विलांस सिस्टम में चार कैमरे लगाए गए थे। इनसे वर्तमान में भोपाल वन मंडल के [illegible] और मालाडोंगरी तथा सीहोर के काली-खो एवं औबेदुल्लागंज के झिरि क्षेत्र की निगरानी हो रही है।

इसलिए यहां बनेंगे टावर

लंबे समय से विभाग महसूस कर रहा था कि शहर की ओर आने वाले वन्यप्राणी अक्सर सिस्टम के कैमरों से ओझल हो जाते हैं। इसलिए अब कलियासोत में पांचवां कैमरा लगाया जाएगा। जो इस क्षेत्र को पूरी तरह कवर करेगा। दूसरा टावर केरवा चौकी स्थित कंट्रोल रूम में लगाया जाएगा। इससे केरवा के वन क्षेत्र की गतिविधियों पर नजर रखी जाएगी।

टेंडरिंग होना है

कलियासोत और केरवा कंट्रोल रूम क्षेत्र में टॉवर लगाने के लिए मंजूरी मिल चुकी है। टेंडरिंग की प्रक्रिया में डेढ़-डेढ़ माह लगेगा। उसके बाद काम प्रारंभ हो जाएगा।

[illegible] तिवारी, कंजर्वेटर, भोपाल वन

वनकर्मियों को पर्वतारोहण व भीड़ मैनेजमेंट की ट्रेनिंग देगा विभाग

भोपाल। नवदुनिया स्टेट ब्यूरो

वन विभाग मैदानी वन कर्मचारियों (वनरक्षक, वनपाल) को पर्वतारोहण और भीड़ मैनेजमेंट की ट्रेनिंग दिलाएगा। यह ट्रेनिंग अगले माह पचमढ़ी में शुरू होगी। भारत स्काउट एवं गाइड के प्रशिक्षक यह ट्रेनिंग देंगे। पचमढ़ी में तीन दिन चली क्षेत्रीय वन्यप्राणी रेस्क्यू दलों की कार्यशाला में यह फैसला लिया गया है। वन अफसरों का मानना है कि वन्यप्राणियों के रेस्क्यू में यह ट्रेनिंग उपयोगी साबित होगी।

यहां रेस्क्यू दलों के सदस्यों ने रेस्क्यू ऑपरेशन के दौरान होने वाली परेशानियां विशेषज्ञों के सामने रखीं। सदस्यों ने बताया कि वन्यप्राणी के कुएं में गिरने या पेड़ पर चढ़कर बैठ जाने की स्थिति में

वन्यप्राणियों के रेस्क्यू ऑपरेशन में उपयोगी साबित होगी तकनीक

उसे सुरक्षित बाहर निकालना या उतारना मुश्किल हो जाता है। दल प्रभारियों का कहना था कि इसके लिए हम तकनीकी रूप से प्रशिक्षित नहीं हैं। भारत स्काउट एवं गाइड के अशोक महापात्रा ने पर्वतारोहण की ट्रेनिंग पचमढ़ी स्थित उनके कैंप में दिलाने की सहमति दे दी। ट्रेनिंग जुलाई से शुरू होगी। कार्यशाला में जयपुर से तेंदुआ एक्सपर्ट डॉ. अरविंद तोमर, बंदरों की नसबंदी के विशेषज्ञ हिमाचल के डॉ. संदीप रतन, मगरमच्छ और सांप विशेषज्ञ चेन्नई के अजय कार्तिक और डीएनए विशेषज्ञ बेंगलुरू के हिमांशु चक्रवर्ती शामिल हुए।

The Hitavada 23 APR 2018

Forest cover in country grew by over 6,700 sq km in last 2 years

■ According to current assessment, forest and tree cover in India is 8,02,088 sq km, which is 24.39 pc of country's geographic area

DEHRADUN, Apr 22 (PTI)

FOREST cover has increased by 6,778 sq km in the country during the last two years, with Andhra Pradesh, Karnataka and Kerala making a significant contribution, according to the Forest Survey of India (FSI).

"The growth in forest cover can be attributed to plantation and conservation activities, both within and outside the recorded forest areas," FSI Director General Saibal Dasgupta told PTI here.

"Improvement in interpretation due to better radiometric resolution of the recent satellite data from Resourcesat-2 also helped in making the observation during 2015-17, he said in an interview.

Dasgupta said that Andhra Pradesh, Karnataka and Kerala have contributed to an increase of 2,141 sq km, 1,101 sq km and 1,043 sq km forest area respectively.

He said the total forest and tree cover in India, according to the current assessment is 8,02,088 sq km, which is 24.39 per cent of the country's geographic area.

"The present assessment shows that 15 States/UTs have above 33 per cent of the geographical area under forest cover," said Dasgupta, who also holds the post of Additional DG of Forest in the Union Ministry of Environment and Forests and Climate Change.

(Contd on page 9)

Van Vihar to be no-plastic zone from today

Yogesh Tejwani

Bhopal: Here's a reason for environmentalists to cheer about. Van Vihar National Park is all set to become a plastic-free zone from Tuesday.

WORLD ENVIRONMENT DAY

As a part of the World Environment Day celebrations, an event has been organised to declare the national park free of plastic.

The move comes after the union ministry of environment and forests had announced to make all national parks, reserves and sanctuaries across the country plastic litter free by the World Environment Day this year.

Park assistant director Sudheer Jangle said, "On the occasion of World Environment Day, we aim to declare the zoo a plastic and litter free area. As a prelude to the event, we had launched an extensive drive to create awareness not only among the visitors but also the staff. Even the employees were provided with steel bottles so that they stop using plastic ones."

The park administration is also planning to run a drive against the use of plastic bottles in the zoo area. "The visitors will not be allowed to carry any plastic bottle in the zoo, and if they are found with it, they will be fined," said Jangle.

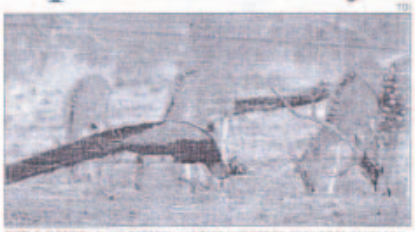

FOR A CAUSE: From Tuesday, visitors will not be allowed to carry any plastic bottle in the Van Vihar National Park premises

"Also we have two food outlets in the zoo area which sell fruit and soft drinks in plastic bottles. We will make sure either they stop selling drinks in plastic bottles, or the visitors discard the bottles in dust-bins," he added.

Inspector general of forests, ministry of environment and forests (MoEF), is celebrating the World Environment Day this year in collaboration with UN environment based on the theme "Plastic Pollution," he said.

MoEF have also asked the authorities to instead use products made from bamboo, grass, leaves, twigs, jute, and husk. The ministry has called for plastic-free cleanliness drives in all protected areas, urban parks and forest areas, and for gifting of seedlings on the birthdays of children, said Jangle.

THE TIMES OF INDIA 05 JUN 201

अनुसंधान वन विभाग को 10 दिन में मिल रही डीएनए रिपोर्ट

वन्य जीवों के शिकारियों का बचना अब कठिन

बेहद जल्द दी जा रही रिपोर्ट

कहां से आ रहे सैम्पल

तैयार की जा रही वन्य प्राणियों की डीएनए श्रृंखला

शत प्रतिशत शिकारी पकड़े जा रहे हैं

टीम हो रहे हैं 3 डीएनए टेस्ट

मुख्यमंत्री ने होशंगाबाद के सिलारी में श्रमिकों को किया संबोधित

पचहत्तर हजार तेंदूपत्ता संग्राहकों को बांटा 6 करोड़ रुपए बोनस

कुल्हा बाई को पहनाई चरण-पादुका

एशिया का बेहतरीन फॉरेस्ट

कान्हा किसली

यह एशिया का सबसे बेहतरीन जंगल है। मध्यप्रदेश में स्थित इस घने जंगल को सरकार ने संरक्षित कर राष्ट्रीय अभ्यारण्य के रूप में विकसित कर दिया। यह 2051.74 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है। सतपुड़ा की पहाड़ियों से घिरा यह अभ्यारण्य बहुत ही हरा-भरा है। यहां सभी तरह के वन्यजीव है, लेकिन मूलतः यह बाघों के लिए बहुत प्रसिद्ध है। यहां शुरू से ही सबसे ज्यादा संख्या में बाघ रहे हैं। इसलिए सन् 1973 में प्रोजेक्ट टाइगर के तहत इस उद्यान को 917.43 वर्ग किमी का क्षेत्र बाघ संरक्षित क्षेत्र घोषित किया गया। यहां की सबसे बड़ी विशेषता यहां का खुले घास का मैदान है। कान्हा एशिया के सबसे सुरम्य और खूबसूरत वन्यजीव रिजर्वों में एक है।

किसान और विभाग के बीच बनेंगे सेतु

प्रदेश में वनदूत बताएंगे कितने पौधे जीवित बचे

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

भोपाल. वन विभाग पौधरोपण की गणना और ताजा स्थिति जानने के लिए वनदूतों का सहारा लेगा। वनदूत हर 6 महीने में वन विभाग को यह रिपोर्ट देगा कि उनके क्षेत्र में जो पेड़ लगाए गए थे, वह जीवित हैं या सूख गए। पौधरोपण के दौरान वन विभाग और किसानों के बीच जो करार हुआ है, उसके अनुसार किसानों को समय पर भुगतान कराने की जिम्मेदारी भी वनदूतों को ही दी गई है। किसानों से पौधरोपण कराने पर वनविभाग वनदूतों को कमीशन देगा। वन अनुसंधान, विस्तार और लोक वानिकी के एपीसीसीएफ पीसी दुबे ने कहा कि इन्हें प्रशिक्षण भारतीय वन प्रबंध संस्थान के माध्यम से दिया जाएगा।

- 5 साल तक पौधे की मॉनीटरिंग।
- पढ़े-बढ़े किसानों को खेती का तैयार करने के लिए प्रोजेक्ट रिपोर्ट तैयार कराने का काम।
- किसानों के लिए वर्क कटाई-छटाई और रख-रखाव के लिए विशेषज्ञ उपलब्ध कराने का काम।
- किसानों के लिए उच्चकोटि नर्सरी से सस्ते पौधे उपलब्ध कराने की व्यवस्था।
- ग्राम सभाओं में पौधरोपण के प्रति जागरूकता और पंचायतों में पौधरोपण के लिए पौधे उपलब्ध कराना।

कार्यक्रम से पूरे प्रदेश में वन विभाग ने करीब डेढ़ हजार वन दूत बनाए हैं।

वन विभाग की योजना

जोखिम में रहने वाले वनकर्मियों का 25 लाख तक का बीमा

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

भोपाल. इंदौर में तेंदुए के घुस आने की घटना के बाद वन विभाग सतर्क हो गया है। विभाग ने अब रेस्क्यू टीम और स्टेट टाइगर फोर्स के करीब ढाई सौ कर्मचारी-अधिकारियों का 6 लाख से लेकर 25 लाख रुपए तक का बीमा कराया है।

बीमा की सौ फीसदी प्रीमियम राशि वन विभाग ने बीमा कंपनी को दी है। वन क्षेत्रपाल से ऊपर के अधिकारियों का बीमा 10 से 25 लाख तक और इससे नीचे के कर्मचारियों का बीमा 6 लाख रुपए तक का किया जाएगा। इसी माह से शुरू बीमा एक साल के लिए प्रभावी रहेगा। आमतौर पर सभी वनकर्मियों का 3 से 5 लाख तक का बीमा शासन कराती है, लेकिन जोखिम वाले कर्मियों का अलग से बीमा कराया गया है।

नवदुनिया 28 MAY 2018

अब नीलगाय की नसबंदी के लिए वैक्सीन तैयार करवा रहा विभाग

पशु चिकित्सालय जबलपुर में हो रहा काम, साल के अंत तक आ जाएगी

भोपाल। नवदुनिया स्टेट ब्यूरो

नीलगाय को बेहोश कर नसबंदी करने के प्रयास कारगर साबित न होने के बाद वन विभाग नसबंदी के लिए वैक्सीन तैयार करा रहा है। मप्र के नानाजी देशमुख पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय जबलपुर के वैज्ञानिक इस पर काम कर रहे हैं। इस दिशा में किए जा रहे प्रयोग सफल बताए जा रहे हैं। विभाग के अफसर कहते हैं साल के अंत तक वैक्सीन आ जाएगी।

मध्य प्रदेश के 35 जिलों में नीलगाय किसानों के लिए बड़ी समस्या है। जंगल से सटे खेतों में नीलगाय झुंड में आकर फसलें बर्बाद कर देते हैं। इस मामले में विभाग हर साल लाखों रुपए बतौर मुआवजा किसानों को देता है। फिर भी सरकार के प्रति किसानों की नाराजगी कम नहीं हो रही है। इसे देखते हुए पिछले

साल नीलगाय शिफ्टिंग की योजना बनाई गई। धार जिले के ऐरा गांव में बोमा बाड़ा (अस्थाई बाड़ा) और हेलिकॉप्टर की मदद से महज डेढ़ दर्जन नीलगाय को ही शिफ्ट किया जा सका। इस अभियान में ज्यादा खर्च को देखते हुए वन अफसरों ने नीलगाय को पकड़ने और नसबंदी कर वापस जंगल में छोड़ने की योजना पर काम किया। वन विहार नेशनल पार्क में यह प्रयोग भी हुआ, लेकिन पूरी सफलता नहीं मिली। इसलिए अब वैक्सीन पर ध्यान केंद्रित किया गया है। सूत्र बताते हैं कि वैक्सीन पर पिछले साल ही काम शुरू हो गया था। नीलगाय पर किए गए प्रयोग से पता चलता है कि वैज्ञानिक किसी हद तक सफल भी हुए हैं। अफसर बताते हैं कि वैक्सीन आने के बाद नीलगाय को पकड़ने और उसकी नसबंदी करने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

अंतिम चरण में प्रयोग

जबलपुर में वैक्सीन तैयार हो रही है। जिससे नीलगाय को पकड़े बगैर जनसंख्या नियंत्रित करना संभव हो जाएगा। प्रयोग अंतिम चरण में है। वैक्सीन आने के बाद जिन जिलों में ज्यादा समस्या है, वहां अभियान चलाया जाएगा।

– शाहबाज अहमद, चीफ वाइल्ड लाइफ वार्डन

नमामि देवी नर्मदे सेवा यात्रा की प्रथम वर्षगांठ

नर्मदा सहित प्रदेश की 313 नदियों के कैचमेंट क्षेत्र में पौधरोपण किया जाएगा : मुख्यमंत्री

नर्मदा के हर्बल पार्क घाट पर पहुंचकर सीएम शिवराजसिंह चौहान ने सीढ़ियों पर कलर कर श्रमदान किया।

डॉक्यूमेंट्री में प्रदेश के जंगलों की कहानी

अब लॉस एंजिल्स में जलवा बिखेरेगा फॉरेस्ट गार्ड का संघर्ष

पत्रिका 16 MAY 2018

शिवनारायण साहू
patrika.com

भोपाल. प्रदेश के वनक्षेत्र और जंगल की परिस्थितियों में काम करने वाले सबसे निचले स्तर के कर्मचारियों में शामिल फॉरेस्ट गार्ड की जिंदगी पर बनी डॉक्यूमेंट्री 'द स्माइल ऑफ फॉरेस्ट' अब लॉस एंजिल्स में अपना जलवा बिखेरेगी। 20 मिनट की यह डॉक्यूमेंट्री जंगल और जंगल के जानवरों की रखवाली करने वाले फॉरेस्ट गार्ड के काम, उस पर लगने वाली मेहनत और उनके संघर्षों पर बनी है। 01 जुलाई 2017 को राजधानी में आयोजित स्टेट बोर्ड ऑफ वाइल्ड लाइफ की बैठक में इस डॉक्यूमेंट्री को मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने लॉन्च किया था।

प्रदेश में बाघों के लिए काम करने वाली संस्था एमपी टाइगर फाउंडेशन सोसायटी ने इस डॉक्यूमेंट्री का निर्माण कराया है

लॉस एंजिल्स सिनेफेस्ट 2019 के सेमीफाइनल में पहुंची 'द स्माइल ऑफ फॉरेस्ट' डॉक्यूमेंट्री

गाईबुक ने एक गार्ड के काम को लेकर किया था शूट

जबकि टाइगर रिजर्व और वनक्षेत्र के कर्मचारियों के लिए काम करने वाली एनजीओ गाईड बुक ने इस डॉक्यूमेंट्री को वनविभाग के लिए निःशुल्क तैयार किया है। डॉक्यूमेंट्री की शूटिंग जनवरी-फरवरी 2017 में पेंच और कान्हा टाइगर रिजर्व में की गई थी। इसमें यह दिखाने की कोशिश की गई है कि किस तरह तमाम अभावों और विपरीत परिस्थितियों के बावजूद एक फॉरेस्ट गार्ड जंगल और जंगली जानवरों की रक्षा करता है। वन्य प्राणियों की सुरक्षा में लगा रहता है। फिर भी उसके चेहरे पर मुस्कान हमेशा बनी रहती है।

> यह गर्व की बात है कि प्रदेश के वनकर्मियों की मेहनत विदेशों तक में पहचान बना रही है। इस डॉक्यूमेंट्री से प्रदेश के जंगल और उनमें काम करने वाले लोगों के संघर्ष पता चलते हैं। एनजीओ को भी बहुत बधाई।
>
> आलोक कुमार,
> एडिशनल पीसीसीएफ वाइल्ड लाइफ भोपाल

वन धन विकास योजना के तहत तीन हजार केंद्र स्थापित होंगे

पीपुल्स संवाददाता ● भोपाल
editor@peoplessamachar.co.in

भारतीय जनजातीय विपणन विकास संघ (ट्राइफेड) के प्रबंध निदेशक प्रवीर कृष्ण ने कहा कि देश में वनोपज के संग्रहण से जुड़े आदिवासियों की आय बढ़ाने की महत्वाकांक्षी 'वन धन विकास योजना' के तहत आगामी दो वर्षों में तीन हजार केंद्र स्थापित करने का लक्ष्य है।

एमडी प्रवीर कृष्ण ने गुरुवार को भोपाल में मीडिया से चर्चा करते हुए बताया कि इनमें से डेढ़ हजार केंद्र इसी वर्ष और शेष डेढ़ हजार केंद्र अगले वर्ष स्थापित किए जाएंगे। इस योजना की शुरुआत हाल में 14 अप्रैल को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने छत्तीसगढ़ के आदिवासी बहुल बीजापुर जिले में की है। अब शीघ्र ही इस तरह के 13 केंद्र मध्यप्रदेश में शुरू किए जाएंगे। इस संबंध में आज

यहां राज्य के उच्च अधिकारियों से चर्चा हुई। उन्होंने बताया कि इस तरह के केंद्र जिले के किसी ग्रामीण अंचल में स्थापित किए जाएंगे।

औसतन एक केंद्र पर 25 लाख रुपए का व्यय होने का अनुमान है। एक केंद्र पर लगभग तीन सौ आदिवासियों का समूह बनाकर वनोपज संग्रहित की जाएगी। केंद्र की मदद से वनोपज के मूल्य संवर्धन (वैल्यू एडीशन) का पूर्ण कार्य किया जाएगा और इसके बाद उस वनोपज को बेचा जाएगा। इस प्रक्रिया के चलते वनोपज संग्रहण से जुड़े आदिवासियों की आय दो से तीन गुना बढ़ने की संभावना है।

उन्होंने बताया कि देश में आदिवासियों की संख्या दस करोड़ से अधिक है और इनमें से लगभग 50 फीसदी यानी लगभग पांच करोड़ आदिवासी अभी भी सुदूर या जंगली इलाकों में बसर करते हैं।

वन रोपणियों की ऑनलाइन अनुश्रवण व्यवस्था का शुभारंभ

भोपाल (प्रसं)। वन विभाग की रोपणियों के ऑनलाइन अनुश्रवण व्यवस्था का प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख डॉ. अनिमेष शुक्ला ने शनिवार को सतपुड़ा भवन स्थित वन मुख्यालय में शुभारंभ किया।

प्रदेश के 11 अनुसंधान एवं विस्तार वन वृत्तों की प्रमुख रोपणियों में जहां इंटरनेट सुविधा उपलब्ध है। इसके माध्यम से इन रोपणियों में पौधों की गुणवत्ता को बेहतर बनाने की दिशा में वन मुख्यालय से अनुश्रवण एवं मूल्यांकन किया जा सकेगा। डॉ. शुक्ला ने इस पहल के लिए संबंधित अधिकारियों को बधाई दी। इस अवसर पर रवि श्रीवास्तव, प्रबंध संचालक, म.प्र. राज्य वन विकास निगम, शाहबाज अहमद, प्रधान मुख्य वन संरक्षक (अनुसंधान विस्तार एवं लोक वानिकी), रमेश कुमार गुप्ता, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक (प्रशासन-2) तथा डॉ. पीसी दुबे, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक (अनुसंधान विस्तार एवं लोक वानिकी) उपस्थित थे।

नौकायन प्रशिक्षण

ईको पर्यटन गतिविधियों के अंतर्गत प्रदेश में अनेक ईको पर्यटन गंतव्य स्थली पर नौकायन संचालन किया जा रहा है। नौकायन पर्यटकों के लिए एक आकर्षक गतिविधि है और साथ ही साथ स्थानीय लोगों के लिए रोजगार का एक अच्छा साधन भी है। पर्यावरण की दृष्टि से भी नौकायन नुकसान रहित होता है एवं पर्यटकों को प्रकृति के नजदीक लाने का एक उत्तम साधन है। नौकायन गतिविधि में संभावित दुर्घटनाओं को ध्यान में रखते हुए यह अत्यन्त आवश्यक है कि उक्त गतिविधियों का संचालन कुशल, प्रशिक्षित एवं लाइसेंसधारी नाविकों द्वारा ही किया जावे। इसके लिए नाविकों को सुरक्षा एवं नौका चालन का विधिवत प्रशिक्षण दिया जाना आवश्यक है।

इस प्रशिक्षण के प्रथम चरण में निम्न पर्यटन स्थलों–सतपुड़ा टाइगर रिजर्व एवं उत्तर सिवनी, दक्षिणी बालाघाट, ग्वालियर, खण्डवा एवं मुरैना सामान्य वनमंडल के नाविक शामिल हुए।

प्रशिक्षण स्थल के रूप में National Institute of Water Sports Kolva (Goa) को प्रदान किया गया है एवं प्रशिक्षण की अवधि 12 जून 2018 से 22 जून 2018 के मध्य रख गया।

प्रशिक्षण का विषय निम्न रखा गया– 1. Life Saving Techniques 2. Power Boat Handling

Most of the Photographs are taken by staff of Madhya Pradesh Forest Department and Photographs which belong to others are captioned as name of the owner below the photographs. We are sincearly thankful to all.

Madhya Pradesh Forest Department
Satpura Bhawan, Bhopal-462004
mpforest.gov.in

मध्यप्रदेश माध्यम/2018